श्री श्याम-कुंज

द्वितीय पुष्प

श्री श्याम सागर

कलकत्ता-७०००७

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाऊँ न रहत निदान ॥

On the Second Anniversary
Of
SHREE SHYAM SAGAR
a

卐 श्री श्यामदेवाय नमः 卐

श्री श्याम कुँज

(द्वितीय पुष्प)

प्रकाशक एवं संग्रहकर्त्ता :—

श्री श्याम सागर

४५, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट,

(बांसतल्ला)

कलकत्ता-७०० ००७

फागण बदी १२ सम्बत् २०४१ | फरवरी १९८५ | मूल्य सप्रेम भेंट

वचना-मृत

मैं हूं श्री भगवान का, मेरे श्री भगवान।
अनुभव यह करते रहो, तज ममता अभिमान॥
प्रभु चरणों में सदा, पुनि-पुनि करो प्रणाम।
कहो तुम्हें भूलूं नहीं, मेरे प्रियतम श्याम॥
नाम राम का प्रथम लो, पिछे लो मुंह ग्रास।
ग्रास-ग्रास में राम कहो, देखो प्रभु को पास॥
दो माला जपना सदा, षोडश मन्त्र महान।
सब सन्तन का मत यही, करो प्रेम रस पान॥
हे प्रभु आनन्द दाता ज्ञान मुझको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गणों को दूर हमसे कीजिये॥
लिजिये हमको शरण में हम सदाचारी बने।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बने॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्री श्याम सागर

वर्तमान कार्यकारिणी

संस्थापक

श्री सीताराम धानुका

अध्यक्ष :

श्री नथमल चौधरी

उपाध्यक्ष :

श्री महेश कुमार धानुका

सचिव :

श्री सीताराम गोयनका

सह-सचिव :

श्री सुशील कुमार शर्मा

कोषाध्यक्ष :

श्री अरुण कुमार शर्मा

प्रचार सचिव :

श्री बसंन्त लाल साह

कार्यकारीणी सदस्य

श्री आत्माराम दादलीका
श्री रामनिरंजन लाटा
श्री विष्णुप्रसाद लडीया
श्री रामचन्द्र लोहिया
श्री किशन कुमार माधोपुरिया

उप समिती

संयोजक : नथमल चौधरी

सह संयोजक सुशिल कुमार शर्मा

भजन पुस्तिका सम्पादक सीताराम गोयनका, अरुण कुमार शर्मा

शृंगार सीताराम धानुका, सुशिल बावरी

किर्तन संचालक एवं व्यवस्था

विष्णु प्रसाद लडीया
रामगोपाल अग्रवाल
अरुण कुमार सिधानिया
श्याम बिहारी सुल्तानिया
रामनिरंजन लाटा
आत्माराम दादलीका
किशोर कुमार बगड़ीया
बाल किशोर साह
महेश कुमार धानुका
गुलझारी लाल बाजपेई
रामचन्द्र लोहिया
किशन माधोपुरिया
आन्नद पोद्दार

आजीवन सदस्य

(१) सीताराम धानुका
(२) नथमल चौधरी
(३) महेश कुमार धानुका
(४) सीताराम गोयनका
(५) सुशिल कुमार शर्मा
(६) अरुण कुमार शर्मा
(७) आत्माराम दादलीका
(८) विष्णु प्रसाद लडीया
(९) रामचन्द्र लोहिया
(१०) राम निरंजन लाटा
(११) किशन माधोपुरिया
(१२) वसन्तलाल साह
(१३) अरुण सिंघानिया
(१४) श्याम विहारी सुल्तानिया
(१५) रमेश कुमार शर्मा
(१६) रामगोपाल अग्रवाल
(१७) जगदीश प्रसाद शर्मा
(१८) किशोर कुमार बागड़िया
(१९) बाल किशोर शाह
(२०) श्याम सुन्दर जालान
(२१) राम अवतार जैन
(२२) ओमप्रकाश रंगवाला
(२३) शम्भु दयाल साह
(२४) प्रकाश चन्द मालपानी
(२५) नरेश कुमार सोन्थलीया
(२६) बनवारी लाल अग्रवाल
(२७) बी. बी. सिंह (एडवोकेट)
(२८) कन्हैया लाल अग्रवाल
(२९) विनोद कुमार चौधरी
(३०) रमेश कुमार धानुका
(३१) विनय कुमार सुल्तानिया
(३२) रासबल्लभ खेमका
(३३) अन्नतराम परसरामपुरीया
(३४) शम्भु दयाल मोदी
(३५) ओमप्रकाश सुरेका
(३६) बाबूलाल बंका
(३७) सुरेन्द्र कुमार चौधरी
(३८) पवन कुमार कानोडिया
(३९) ओम प्रकाश वल्लभ
(४०) महावीर प्रसाद अग्रवाल
(४१) रामा कान्त कानोरिया
(४२) कमल कुमार मिश्रा
(४३) अशोक कुमार सराफ
(४४) सुशिल कुमार बावरी
(४५) गुलझारी लाल बाजपेयई
(४६) आन्नद कुमार पोद्दार
(४७) कैलाश पटवारी
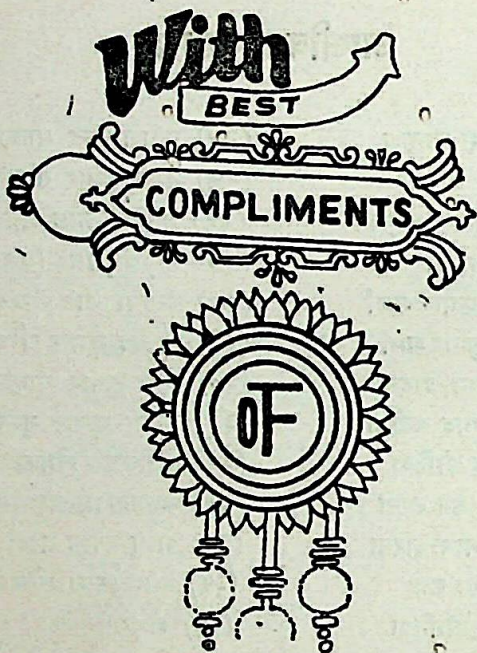
श्री श्याम चालीसा

श्री गुरु चरनन ध्यान धर, सुमिरि सच्चिदानन्द ।
श्याम चालीसा भणत हूँ, रच चौपाई छन्द ॥

श्याम २ भजि बारम्बारा, सहजहि हो भवसागर पारा ।
इन सम देव न दूजा कोई, दीनदयाल प्रभु दाता होई ॥
भीम सुपुत्र अहिल वति जाया, कहिं भीम का पौत्र कहाया ।
यह सब कथा कहि कल्पान्तर, तनिक न मानो इसमें अन्तर
बरबरीक विष्णु अवतारा, भक्तन हेतु मनुज तनु धारा ।
वासुदेब देवकी पियारे, जसुमति छैया नन्द दुलारे ॥
मधुसूदन गोपाल मुरारी, बृज किशोर गोवर्धन धारी ।
सियाराम श्रीहरि गोविन्दा, दीनदयाल श्री बालमुकुन्दा ॥
दामोदर रणछोड़ बिहारी, नाथ द्वारिकाधीश खरारो ।
नरहरि रूप प्रह्लाद पियारे, खंभ फाड़ हिरणाकुश मारा ॥
राधा बल्लभ रुक्मणि कथा, गोपीबल्लभ कंश हनन्ता ।
मनमोहन चितचोर कहाये, माखन चोरि चोरि के खाये ॥
मुरलीधर यदुपति घनश्यामा, कृष्ण पतित पावनाभिरामा ।
मायापति लक्ष्मीपति ईशा, पुरुपोत्तम केशव जगदीशा ॥
विश्वपते त्रिभुवन पशारा, दीन बन्धु भक्तन रखवारा ।
प्रभु का भेद कोई न पाया, शेष महेश थके मुनिराया ॥
नारद शारद ऋषि योगेश्वर, श्याम २ सब रटत निरन्तर ।
कवि कोविद करि सके गिनन्ता, नाम अपार अथाह अनन्ता ॥
हर सृष्टि हर युग में भाई, लीन अवतार भक्त सुखदाई ।
हृदय माही करि देख विचारा, श्याम भजे तो हो निस्तारा ॥

कीर पढ़ावत गणिका त्यारी, भीलनी की भक्ति बलिहारी ।
सती अहिल्या गौतम नारी, भई श्राप बस शिला दुखारी ।।
श्याम चरण रज में चित लाई, पहुंची पति लोक में जाई ।
अजामील अरु सदन कसाई, नाम प्रताप परम गति पाई ।।
जाको श्याम नाम आधारा, सुख लहहि दुख दूर हो सारा ।
श्याम सुलोचन है अति सुन्दर, मोर मुकुट सिर तन पीतांबर ।।
गल वैजन्ती माल सुहाई, छबि अनूप भक्तन मन भाई ।
श्याम २ सुमरहु दिन राती, श्याम दुपहरी और प्रभाती ।।
श्याम सारथी जिसके रथ के, रोड़े दूर हो उसके पथ के ।
श्याम भक्त न कहीं पर हारा, भोर परी तब श्याम पुकारा
रसना श्याम नाम रस पीले, जी ले श्याम नाम के हीले ।
संसारिक सुख भोग मिलेगा, अन्त श्याम सुख योग मिलेगा
श्याम प्रभू हैं तन के काले, मन के गोरे भोले भाले ।।
श्याम सन्त भक्तन हितकारी, रोग दोष अघ नाशे भारी।।
प्रेम सहित जो नाम पुकारा, क्षण में हो भव सागर पारा ।
खाटू में हैं मथुरा बासी, पार ब्रह्म पूरण अविनाशी ।।
सुधा तान भरी मुरली बजाई, दिल्ली प्रान्त जहां सुनि पाई ।
वृद्ध बाल जेते नारी नर, मुग्ध भये सुनि वंशी के स्वर ।।
हरबर कर पहुंचे सब जाई, खाटू में जहँ श्याम कन्हाई ।
जिसने श्याम स्वरुप निहारा, भव भय से पाया छुटकारा ।।

श्याम सलोने सांवरे, बर्बरीक तनुधार ।
इच्छा पूरण भक्त की, करो न लाओ बार ।।

खाटू मेले का महत्व

भगवान से सम्बन्धित उत्सवों को मेला कहा जाता है साधारणत; शुक्लपक्ष की प्रत्येक द्वादशी को यात्रीगण भगवान के दर्शनार्थ खाटू में एकत्र होकर विविध प्रकार के उत्सव मनाते हैं।

वर्ष में प्रमुख चार मेले होते हैं:—

(१) ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी

(२) भादवा शुक्ला द्वादशी

(३) कार्तिक शुक्ला द्वादशी

(४) फाल्गुन शुक्ला द्वादशी

परन्तु इन चारो मेलों में भी ऋतु अनूकुलता के कारण फाल्गून शुक्ला द्वादशी के मेले का सर्वोपरि महत्व है।

—:सूचना:—

(१) श्री श्याम सागर का कृष्ण-पक्ष और शुक्ल पक्ष की एकादशी का रात्रि कीर्तन श्री श्याम सागर के मार्यालय ४५ बाँसतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता-७ में होता है।

(२) सभी श्याम बाबा के भक्त प्रेमियों से अनुरोध है कि जो भी श्रद्धालु भक्त अपने निवास स्थान पर कीर्तन करवाना चाहे वे मूंडली के कार्यालय से सम्पर्क करके अनुबन्ध करवा सकते हैं।

(३) सभी श्याम बाबा के भक्त प्रेमियों से विनती है कि कीर्त्तन में निरंतर दर्शन देकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें।

हम इनके आभरी हैं !

श्री देवकीनन्दनजी पोद्दार

श्री सत्यनारायणजी बजाज

श्री सरोज कुमार जी शर्मा

,, रामवतार जी जोजी

,, रामवतार जी जैन

,, ओमप्रकाश रंगवाला

,, ईश्वरी प्रसाद जी नाहौल

,, मैसर्स कोन्टीनेन्टल ट्रेडर्स

सन्मार्ग पत्रिका

दैनिक विश्वमित्र
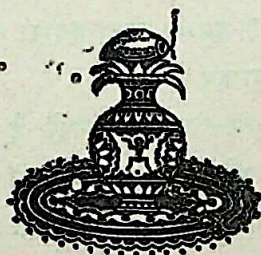
नोट :—कृपया भजन पुस्तिका का दुरुपयोग न करें !

कृपया भूल सुधार कर पढ़े !

दो शब्द

बन्धूवर,

परमात्मा तत्व की प्राप्ति का अधिकार मनुष्य को मिला है, देवताओं को नहीं। राम चरित मानस में जब गरुड़ जी ने प्रश्न किया कि सबसे दुर्लभ शरीर कौन-सा है? तो मनुष्य शरीर को सबसे दुर्लभ तथा श्रेष्ठ कहा गया है—'नृदेह माद्यं सुलभं सुदुर्लभम्' इसको दुर्लभ बताया है। मनुष्य को अपने उद्धार की चेष्टा करनी चाहिये। मनुष्य शरीर में आकर जो वास्तविक लाभ है, उसको नही लेता केवल ऐसे ही खाने-कमाने में लग जाता है, उसकी निन्दा की गई है। आप हम सभी विचार करें! हमें उस तत्व को प्राप्त करना है, जो इस मनुष्य शरीर से ही प्राप्त किया जा सकता है। दूसरे शरीरों से उसकी प्राप्ति नही हो सकती उसकी प्राप्ति कैसे हो? हमारा ध्येय, हयारा लक्ष्य परमात्म तत्व की प्राप्ति का होना चाहिए।

वास्ताव में परमात्म-तत्व कठिन नहीं है, क्योंकि संसार का कोई भी किञ्चन्मात्र भी ऐसा परमाणु नहीं है, जहां परमात्मा न हो। उस परमात्मा की प्राप्ति कठिन नहीं, सुगम है। कठिनाई यही है कि उसकी जोरदार इच्छा नहीं है। इसीलिये कलयुग में भजन-संकीर्तन तथा भक्ति से इस मार्ग को सुलभ करने की चेष्टा हमारी संस्था द्वारा प्रत्येक एकादशी को मंडल कार्यालय में तथा शनिवार रात्रि भक्तजनों के घर जाकर भजन-संकीर्तन करती है।

आपके हाथों में भजन पुस्तिका 'श्री श्याम कुंज' का द्वितीय पुष्प है, यह सभी श्याम भक्तों ने मिलकर प्रकाशित करवाया है। इसके अलावा संस्था इस चेष्टा में भी प्रयत्नशील है कि खाटू धाम में जमीन क्रय कर धर्मशाला का निर्माण करें, इस कार्य में काफी उन्नति हुई है। जिस जमीन का क्रय किया जा रहा है, उस जमीन पर फाल्गुन मेले पर भोजनालय का प्रबन्ध भी संस्था के सदस्यों द्वारा किया जा रहा है। हमें आशा है कि गत वर्ष की भांति अगर आप सभी बन्धुओं का सहयोग हमें मिलता रहा तो जल्द ही जमीन का कार्य पूर्ण होकर धर्मशाला निर्माण कार्य प्रारम्भ हो जायेगा।

प्रस्तुत अंक के प्रकाशन में जिन महानुभावो भक्त प्रेमियों ने हमें अपना अमुल्य सहयोग दिया है, तथा तन, मन, धन एवं विज्ञापन दिया है हम उनके अभारी हैं।

सभी के प्रति आभार

सचीव

सीताराम गोयनका

विषय सूची

॥ श्री ॥

भजन—१

श्री गणेशाय नमः

गणेश वन्दना

जयति गजानन्द गणपते, गणनायक महाराज।
प्रथमहिं सुमिरूँ नाम को, सिद्ध करो सब काज॥
आओ आओ जी थे पारवती का लाल—
गजानन्द थारो ध्यान धरूँ।
थे आज्यो रिध सिध न ल्याज्यो भूल न जाज्यो आज।
सबसे पहले सुमरा थान सिद्ध करो सब काज
आवो आवो जी भक्ता रा प्रतिपाल
थारा ही गुण गान करूँ॥१॥

पिता तुम्हारो महादेव मां पारबती का प्यारा।
थे म्हारा नैणा री ज्योति थासु जग उजियारा॥
सब संकट दिज्यो टाल, थारो ही सम्मान करूँ॥२॥

सुंड सुंडाला दूंद दूंदाला, कर में फरसो भारी।
गल वैजन्ती माला सोहे मुषे की असवारी॥
थारो सुन्दर रूप विशाल काई तो बखान करूँ॥३॥

ना जाणु करनी कविताई ना जाणु मैं छन्द।
गजानन्द थारी कृपासुं गावे ताराचन्द॥
म्हारो कारज लिज्यो सम्भाल चरण रज पान करूँ॥४॥

भजन—२

श्री गणेश वन्दना

आज म्हारे आँगणिये मैं, गौरी पुत्र आया जी।
गौरी पुत्र आया जी भक्ता रे मनड़े भाया जी ॥ टेर ॥

कमर तागड़ी पगां पैजणी, हाथ झूंझनियों ल्यायाजी,
नैणां में काजलियो थारे, माथे चाँद मंडाया जी ॥ आज ॥
पहर जरी को झुगलो, चोटी रेशम फूल गुंथाया जी,
ठुमक-ठुमक पग धरै है गणपत, बोलै है, तुतलाया जी ॥ आज ॥
चौकी पर सिंहासन जाँपर, सुन्दर वस्त्र बिछाया जी,
चरण धोय चरणामृत लीन्यो, शिवनन्दन बैठाया जी ॥ आज ॥
अक्षत चन्दन धूप दीप कर, पुष्पहार पहराया जी,
भोग लगावण एक थालभर, लाडूड़ा मंगवाया जी ॥ आज ॥
लाडू देख विनायक जी को, मनड़ो घणो हरसाया जी,
उठा-उठाकर खावे गणपत, रुचि-रुचि भोग लगायाजी ॥ आज ॥
देख छटा श्री गणपत जी की, मन म्हारो ललचायाजी,
नजर न लागै लम्बोदर क, राई लूण कराया जी ॥ आज ॥
विघ्न निवारण, मंगल कारण, रिद्धि सिद्धि संग में ल्यायाजी।
'श्याम सागर' श्रीगणपतजीका प्रेम से लाड लडायाजी ॥ आज ॥

✰

ईश्वर का भजन ही जीवन का भोजन है।

भजन—३

(तर्ज—प्रेम गीत)

गुरुदेव मेरे तुम हो, मुझे शरण में ले लो ना।
संकट को मिटा करके, दास अपना बना लो ना॥

अन्तरा

बीच भवंर में पड़ी, मेरी नाव पुरानी है।
या डगमग डोल रही, गुरु तुम को निभानी है॥
अनगिनत निभाई हो, मेरी भी निभा दो ना ॥१॥ गुरुदेव॥

लहरों में फँस गया हूँ, सुझे ना किनारा है।
आकर के बचालो गुरु, इक तेरा सहारा है॥
देकर के सहारा मुझे, भव-पार लगा दो ना ॥२॥ गुरुदेव॥

करुणा के सागर हो, करुणा बरसाओ तुम।
दीनों के दयालु हो, सत्मार्ग दिखाओ तुम॥
भटके हुये राही की पतवार सम्भालो ना ॥३॥ गुरुदेव॥

मेरी जीवन नैया को, तुम्हे अर्पण करता हूँ।
गुरुदेव तेरे दर पर, नित शीश झुकाता हूँ॥
'बसन्त' की अरजी पे, चमत्कार दिखा दोना ॥५॥ गुरुदेव॥

चित शुद्ध करके भक्ति-भाव से भगवान का गीत गाओ
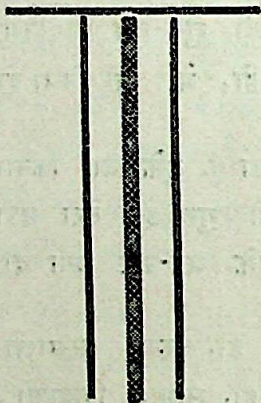
भजन—४

॥ श्री हनुमत देवाय नमः ॥

अजंनी को लाल निरालों रे···अजंनी को ॥ टेर ॥

ऐसो तो निरालो बाबो ओर-नहीं देख्यो
देख्यो एक हठीलो रे—अजंनी को
घुंघरू बांध बाबो छमछम नाचे,
लाल लंगोटें बालो रे—अजंनी को
नाचत - नाचत भयो मतवालों,
वालो घोटा वालो रे—अजंनी को,
रोम रोम में राम रमैंयों
राम नाम मतवालो रे—अजंनी को
भीड़ पड़या यी दौड़्यो-२ आवे
भगतां को रखवालो रे—अजंनी को
भगतां आब था सूं अर्जी लगाव
आशा पूरः म्हारी रे—अजंनी को
'रामवतार राम भज प्यारे'
भजलो बजरंग वालो रे—अजंनी को

ईश्वर से डरना भाग्यशाली बनने का का लक्षण हैं
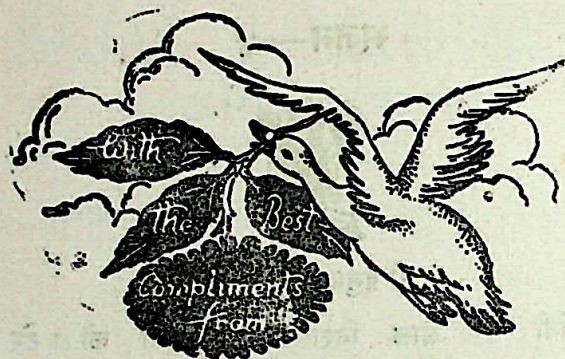
भजन—५

॥ तर्ज—बैठयो खाटू में ॥

श्री हनुमान वन्दना

बैठयो सालासर लगाकर दरबार—अंजनी लालो राज करे
यो तो कर देव भक्तां का बेड़ा पार—जो इकी शरण आय पड़े

अन्तरा

अंजनी मां का लाल कहावो—लाल लँगोटे वाला
काना में थारे कुन्डल चमके गल फूलों की माला
घोटो ल्या जी थे पवन कुमार..........अंजनी !

भीड़ पड़या थानैं भगत बुलाव दौड़या-दौड़या आवो
भगता का दुख पल में मिटाकर बानै गले लगावो
थे तो भगत का बड़ा ही रखवार..........अंजनी !

गली-गली में और घर-घर में ध्यावे नर और नारी
म्हे भी थारे दर पे आया सुनके महिमा भारी
म्हारी नैया की सम्भालो पतवार.........अंजनी !

पेड़ा श्री फल भोग लगावा-घृत सिन्दुर चढावा
सवा रुपयो भेट चढाकर-थारी रात जगावा
देवां जात जडुला म्हे थारे द्वार.........अजंनी !

बाबा थारी महिमा को—कोई न पायो अन्त
पवन पियारा थारी कृपा से गावे है 'वसन्त'
थे तो 'श्याम सागर' को कर दिज्यो उद्धार......अजंनी !

—०—

"कस्मै देवाय हविषा विधेम" ?

★

भजन—६

श्री शिव वन्दना

(तर्ज—सीसे से पी या......फूल और पत्थर)

घोट के पी या छाने हुए पी
या अपने भक्तों के हाथों से पी
पर पीले भोले खुशी से पीले भोले। पर......

बूंटी ये प्रेम से बनाई है पर्वत कैलास से मँगाई है,
प्रेम से पीले आजा, तीन लोकों के राजा,
भक्तों ने प्रेम से छनाई है...घोट के।

संग में मैया जो ना आयेगी बुंटी अधूरी रह जायेगी
संग में लाना चाहिए, दरश दिखलाना चाहिए।
शोभा हमारी बढ जायेगी । घोट के···।

भंगिया भोले जो चढ़ाओगे, मस्ती में चूर हो जाओगे,
झूमोगे नाचोगे तुम, डमरू बजाओगे तुम,
भक्तों के संग रम जाओगे···। घोट के···।

'कमल किशोर' भजन गाता है, चरणों में शीश नवाता है
नाव भवंर में मेरी, आगे है मर्जी तेरी,
पार लगाना तुझको आता है···। घोट के···।

भक्त का हृदय भगवान की बैठक है

गरल सुधा रिपु करेहि मिताई
गोपद सिन्धु अनिल सितलाई

●

शुभकामनाओं के साथ :—

श्याम स्टोर

२०४, चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता-७

हाथ से कुटे उच्चकोटि के मसाले तथा शुद्ध खाद्य सामग्री के विक्रेता

भजन—७

॥ श्री दुर्गाय नमः ॥

तर्ज : हे गिरधारी...........

जय जगदम्बे, जय मां अम्बे, आया तेरे द्वार
लाज मेरी रख लेना।

रख लेना मां रख लेना, मेरी लाज अब रख लेना
जय काली कलकत्तेवाली, होज्या सिंह असवार
लाज मेरी रख.......

कामरूप में कामक्ष्या कलकत्ते में काली तूं
बम्बई में मम्बा देवी मैया झुन्झुनूँवाली तू
दूर दूर से आवे यात्री, करते जय जयकार
लाज मेरी रख.......

चण्डीगढ़ में मां चण्डी जामनगर में है ज्वाला
ब्रह्माणी रुद्राणी तूँ घर-घर तेरा उजियाला
खड्ग खप्र तेरे कर में सोहे, मन्दिर है गुलजार
लाज मेरी रख .....

अम्बाला में मां अम्बे देवी में दुर्गा मैया
तारा अष्ट भुंजावाली पार करो मेरी नैया
मात भवानी देखो कानी, सुनले करुण पुकार
लाज मेरी रख.......

गिरजा गौरी अन्नपूर्णा क्या क्या तुमको बतलाऊँ
रसना में वासा किज्यो आदिशक्ति तेरा गुण गाऊँ
कह "आलू सिंह" श्री चरणां में सौंप दई पतवार
लाज मेरी रख.......

विधा के समान संसार में कोई नैत्र नहीं है

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतंगमय।

☆

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ :—

जय

श्री

श्याम

भजन—८

(बावली आँख्या)

दोहा—दाता थे दातार हो, सुख का हो भंडार ।
लज्जा मेरो राख्यो; हो लीले असवार ।।

थां बिन म्हारी आँख्या हो गई बावली ।
ई टाबर के मन में बस गई सूरत थारी साँवली ।।टेर।।

हिवड़ो म्हारो सुनो डोलै डग मग झोला खावै है ।
आँखड़ल्या विरहा की मारी आँसुड़ा ढलकावै है।।
कैहा चलसी थां विन म्हारी गाड़ली ।। ई टाबर ।।

मीरा पर कृपा कीनी थी, सुणबा आया बातड़ली ।
दास थारो यो आश लगायां, खड़्यो उड़िके बाटड़ली ।।
प्रेम जाम से भरदे, म्हारी बाटली ।। ई टाबड़ ।।

पहल्यां प्रीत लगा करके तूं क्यूं छोड़े मझधारजी ।
प्रेम भाव को पाठ पढ़ाकर मतबिसरे दिलदारजी ।
मन में रम गई सूरत थारी, साँवली ।। ई टाबर ।।

थे छोड़ो पण मैं नहीं छोड़ूँ, मैं तो थारो दास जी ।
खाटू के घनश्याम मुरारी, मैं तो थारो दास जी ।
'आलूसिंह' की थां बिन आँख्या बावली ।। ई टाबर ।।

लोक में सत्य ही ईश्वर है । धर्मसदा सत्य में ही रहता है ।

'अहमिन्द्रो न पराजिग्ये'

भजन—९

(तर्ज—घर आंया मेरा परदेसी)

दोहा: नीलो घोडो नो लखो-मोत्या जड़ी लगाम
खाटू के सरदार को-झुक-झुक करा प्रणाम ॥

आवोजी म्हारा वनवारी-मोर मुकुट मुरलीधारी...आवोजी

अहलवती का लाला हैं
खाटू में रहने वाला हैं
:भगतों के संकट हारी, आवोजी म्हारा वनबारी ॥

कीर्तन मांही आजा रे
मीठी मुरली सुना ज्या रे
:आश लगा राखी भारी, आवोजी म्हारा वनवारी ॥

अब नहीं प्रभु मोहे विसराना
चरणों से मत ठुकराना
:भगत जनो के हितकारी, आवोजी म्हारा बनवारी ॥

मेरे नैनो का तारा हैं
भगतों का प्राण पियारा है
अरज़ी सुनल्यो थे म्हारी, आवोजी म्हारा बनवारी ॥

"बसन्त" तेरे गुण गायेगा
चरणों में शीश नवायेगा
"श्याम सागर" जाये बलिहारी आवोजी म्हारा बनवारी ॥

आप तेजः स्वरूप है, मुझमें तेज स्थापित कीजीए

भजन—१०

दोहा : आवो म्हारा श्याम घणी भगता कर रया ॥ टेर ॥
हिवड़े में धीरज नहीं ज्यों ज्यों कर रया देर ॥

मत घबड़ा नादान श्याम तेरा आयेगा
आयेगा वो आयेगा हो लीले असवार श्याम तेरा आयेगा ॥टेर॥
जब भी पुकारा वह दौड़ा-दौड़ा आया,
भक्तों का दुख पल में मिटाया
ये निश्चय कर जान, दुख टल जायेगा ॥ टेर ॥
ये दुनिया है गोरख धन्धा, मत होव माया में अन्धा
सोच समझ अज्ञान फेर पछतायेगा ॥ टेर ॥
साचे मन से जो कोई ध्यावे, मन इच्छा फल तुरंत ही पावे
निश्चय हो कल्याण अमर पद पायेगा ॥ टेर ॥
आवो गावा सब मिल करके मोहिनी मुरत चित में धरके
बाबा का करां गुणगाण वो दरस दिखलायेगा ॥ टेर ॥
"श्याम 'सागर' की अटकी नैया-थाने उडीका आज्या कन्हैया
म्हाने यो विश्वास, पार तू लगायेगा ।

संसार में बने रहो पर हरि को न भुलो

काम आदि मद दंभ न जाके।
तात निरन्तर बस मै ताके।।

भजन—११

(तर्ज—रंग बसन्ती आ गया, मस्ताना……)

श्याम मुरारी, गिरवर धारी, वृन्दावन में आ गया,
मस्ताना मौसम छा गया।
रंग है इसका नीला-नीला, गले पिताम्बर पीला-पीला,
सब देवों में है रंगीला; श्याम मुरारी ॥ टेर ॥
सारी सखियां मङ्गल गावे, नन्दलाला को सभी झुलावे,
फूल भी खिल के महक उड़ावे, देवता गण भी शीश झुकावे,
शंकर भोले दर्श को आये, मात यशोदा उन्हें भगाये
भाग जा जोगी, ओ ऽऽऽऽऽ
देख के तेरा रूप निराला, नाग गले डाले हैं काला,
डर जायेगा ये नन्दलाला, श्याम मुरारी,
श्याम मुरारी गिरवर… … … … ॥ १ ॥
की मोहन ने माखन चोरी, करे शिकायत राधा गौरी,
हाथ में बांधी माँ ने डोरी, फिर भी कभी करेगा चोरी,
राधा खड़ी-खड़ी मुस्काए, हरि के मन को और ललचाये,
वाह री राधा ओ ऽऽऽऽऽ
हरि ने ऐसा रास रचाया, उसके मन को और सताया,
जा कर उसके ही मन भाया, श्याम मुरारी,
श्याम मुरारी, गिरवर धारी… … … … ॥ २ ॥

★

जो सुखी होना चाहे, वह तृष्णा को त्याग दे

रात गँवायो सोय कर, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय।

भजन—१२

कूदे जमुना में कन्हैया, लेके मुरली ॥ टेर ॥

कूद पड़े बनवारी जल में, ग्वाले रोये सारे,
कुछ तो ग्वाले घर को भागे, यशोदा जाय पुकारे।
जल में कूद्यो तेरो छैला, लेके मुरली ॥

रोवत रोवत यशोदा मैया, जमुना तट पर आई,
मुझे छोड़कर कहाँ चले हो, छोटे कृष्ण कन्हाई।
ठाढो रोवे तेरी मैया, ले के मुरली ॥

कृष्ण गये पाताल लोक, वहाँ नागिन बैठी पाई,
सोया नाग जगा दे नागिन बोले कृष्ण कन्हाई।
गेंद दे देरी नागिनियाँ, ले के मुरली ॥

इतनी सुनके नागिन ने, झट नाग को दिया जगाय,
लगी फुफकार बदन भयो कारो, लिपट शीश के जाय।
काले पड़ गये कृष्ण कन्हैया, लेके मुरली ॥

थोड़ा थोड़ा करके प्रभु ने, अपना बदन पसारा,
चरण पकड़ कर नागिन बोली, छोड़ो पति हमारा।
"राजू" कहते नाग नथैया लेके मुरारी ॥

—०—

दुखियों के प्रति मैत्री की भावना रखो

भजन—१३

॥ महामन्त्र ॥

ॐ श्री श्याम देवाय नमः ॐ श्री श्याम देवाय नमः
महामन्त्र का जाप करो, अपने मन को साफ करो।ॐ।

अन्तरा

महामन्त्र की कर भक्ती, तुझको मिल जाए शक्ति,
आत्मबल बढ़ जाएगा, इससे सरल नहीं युक्ती,
सबको बताओ आप करो, महामन्त्र का जाप करो।ॐ।
जब आत्म बल बढ़ जाये, सुख दुःख की चिन्ता-छूटे
मोह माया सब मिट जाये, सच्चा सुख फिर तूं लूटे,
प्रभु से तभी मिलाप करो, महामन्त्र का जाप करो…
जीवन नैया गर भटके, काम यदि तेरा अटके,
इसी मन्त्र की कर रटना, मिट जाये सारे खटके,
प्रभु सब के संताप हरो, महामन्त्र का जाप करो…
ऋषी मुनी भी गाते हैं, इससे सब कुछ पाते हैं,
जो गाये सो पायेगा, अनबोले रह जाते हैं,
मौका है जी जाप करो, महामन्त्र का जाप करो…
महामन्त्र कल्याणी है, वर देता बरदानी है,
सर्व शक्ती का पुञ्ज है ये, सबने बात ये मानो है,
स्वर में यही अलाप करो 'श्याम सुन्दर संग जाप करो
………ॐ

☆

"आलस्य भी एक प्रकार की हिसा है"

उलटा नाम जपत जग जाना।
बालमीकी भए ब्रह्म समाना॥

भजन—१४

(तर्ज—रेशमी सलवार……)

श्याम पीछा छोड़ राधा रानी का, काहे ढुंढ़े रास्ता राजधानी का।
राधाः मै जब-जब घर से निकलू, मोहे खडो मिले सांवरिया ॥
मटकी मोरी छीने, दधि दे जा री वृज नारियां।
राज बनवारी का…श्याम…

कृष्णः राधेजी तुम्हारा मटका, मेरे दिल को दे गया झटका,
तूं चल गई बरसाने, मैं डोला भटका—भटका,
रूप वृजनारी का…श्याम…

राधाः प्यारा मैं मथुरा की ग्वालिन, और तूं गोकुल का ग्वाला,
प्यारा मेल मिलेगा कैसै, अजो मैं गोरी तूं काला;
छैल नन्दरानी का…श्याम…

कानो में तेरे सोहे कुण्डल, गल में वैजन्ती माला,
छाती में ठाकुर के एक हीरा चमके आला,
राज बनवारी का…श्याम…

卐

"ब्रम्हचर्य दुर्गति को नष्ट कर देता है"

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे।
लवन बिना बहु विजन जैसे॥

दाता थे दातार हो, सुख का हो भण्डार।
लज्जा मेरी राखियो, हो लीले असवार॥

भजन—१५

(तर्ज—वारी जाऊ चिरमीन)

लीलों घोड़ो नवलखो ज्यारी मोत्या जड़ी रे लगाम,
वारी जाऊ लीलेन।......
रूमझूम बाजे घुघरा घौड़लियाँ रा बाजे पोड़,। बारी जाऊँ...
माँ ऐलवती रा लाड़ला थे तो भीमसेन का लाल। बारी जाऊँ
श्यामधनी म्हारा आप चढ़या वेतो हो लीले असवार। बारी...
रामा श्यामा आव जो कोई कलियुग माहो करूड़। बारी जाऊँ
दूर देशों से आवेरे यात्री कोई ध्यावे सफल समाज। बारी-जाऊँ
'श्याम सागर' संग अणतु बोले थे तो सुणज्यो लखदातार। बारी

भजन—१६

श्याम पिया मोरी रँगदे चुनरिया,
कृष्ण पिया मोरी रँगदे चुनरिया, श्याम पिया ओ ऽऽ
ऐसो रँगदे, रंग नहीं छूटे ओ ऽऽ
धोबिया धोये चाहे सारी उमरियां॥ श्याम०
लाल न ओढूँ, पीली न ओढूं, ऽऽ
मैं तो ओढूं श्याम काली कमलिया॥ श्याम०
गागर भर दे, सिर पर रख दे, ओ ऽऽ
चल के बता दे श्याम तोरी नगरिया॥ श्याम०
बिना रंगाये, घर नहीं जाऊँ, ओ ऽऽऽ
बीत जाये चाहे सारी उमरिया॥ श्याम०
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ओ ऽऽ
श्याम चरणा में मोरी लागी नजरिया॥ श्याम०

★

भजन—१७

(तर्ज रसिया)

ग्वालन करदे मोल दही को माखन, मुझको नेक चखाय।

सुन गोरी बरसाने वारी
नेक चखादे माखन प्यारी
आज मानले बात हमारी

मटकी को दरसन करवायदे, क्यों राखी दुबकाय ।।

नहीं दे आज समझले मन में
कोई दिन हाथ पड़ेगी वन में
सारी कसर निकारुँ छिन में

लुकुटि मार फोड देऊँ मटकी-लेऊँ दान चुकाय ।।

सोच समझ ले नहीं हो धोका
जिस दिन लग गया मेरा मोका
दधि तेरा विक वाय देऊँ चोखा

चोरी करूँ आज तेरे घर में-पहले देऊँ बताय ।।

पनघट पर भरने जाय पानी
मोय तेरी गागर लुढ़कानी
यही हमारी प्रीत पुरानी

अबहूँ समझ श्याम समझावे - फिर पाछे पछताय ।।

असंतोष पराजय का दूसरा नाम है,...

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥

भजन—१८

(तर्ज मारवाड़ी)

म्हे तो दोड़्या दौड़्या आया जी बाबा जी थारे कीर्तन में-
कीर्तन में थारे दर्शन ने ॥ म्हे तो ॥

घणा दिना सेचाव थो म्हारेः
कद आस्या दरबार में थारे
आज होग्या मन का चाया जी बाबा जी थारे कीर्तन में

धन्य घड़ी धन्य भाग्य म्हारो
आज करा बाबा कीर्तन थारो
आज आनन्द छाया जी बाबा जी थारे कीर्तन में

सब मिलकर थारा गुण गावा
नांचा गावा भजन सुनावा
होगी सफल या काया जी बाबाजी थारे कीर्तन में

बाबा म्हाने दर्शन दिज्यो
अपना जाना शरण में लिज्यो
"ताराचन्द" गुण गाया जी बाबा जी थारे कीर्तन में

वाणी के सही ढ़ंग का उपयोग उन्नति का साधन बनता है !

भजन—१६

कुण जाणे या माया श्याम की अजब निराली रे।
त्रिलोकी को नाथ जाट को बन गयो हाली रें।
सौ बीधा को खेत जाट के श्याम भरोसे खेती रे॥
बिना बाड़ को खेत जाट को श्याम रखाली रे॥ त्रिलोकी····

भूरी भैंस चिमकणी जाट क दो छैली दो नारा रे।
बिना बाड़ को बाड़ो जिम बान्ध न्यारा न्यारा रे।
आव चोर जद ऊभो दीखे काढे गाली रे॥ त्रिलोकी···

जाट जाटनो निर्भय सोवे, सोवे, छोरा छोरी रे।
श्याम धणी पहरां के ऊपर, कैया होवे चोरी रे।
चोर लगावे नित की चक्कर जावे खाली रे॥ त्रिलोकी···

बाजरा की रोटी खावे ऊपर घी को लचको रे।
पालक की तरकारी सागे भर मुली को बटको रे।
छाछ राबड़ी को कर कलेवो भर-भर थाली रे॥ त्रिलोकी···

धन्ना जटा को छपरो छायो लछमी बन्ध खिचायो रे।
चेजारो वन चिणवा लाग्यो हाथा गारो गायो रे
बना दिया घर जड़वा तालो देग्यो ताली रे॥ त्रिलोकी···

सोहनलाल लोहाकार कहे यो घर भक्ता के आवे रे।
घावलिया के ओठ बैठ के श्याम खिचड़ो खावे रे।
भक्तां के सांग नाच कुद दे दे ताली रे॥ त्रिलोकी···

"धर्म एकांकी नहीं पूर्ण होता है"

भजन—२०

(तर्ज—हमतुम चोरी से)

राधीका गोरी से बृज की छोरी से, मैया करादे मेरो व्याह,
बन्धें बन्धन के प्यार में राधीका ॥

जो नहीं व्याह करायें तोरी गैया नाही चराऊँ।
आज के बाद मोरी मैया, तोरी देहली पर न जाऊँ।
आयेगा—रे मजा—रे मजा अब जीत हार का''' ॥राधीका॥

चन्दन की चौकी पर, मैया तुझको बिठाऊँ।
अपनी राधीका से में चरणा तोरे दबवाऊँ।
भोजन बनवाऊँगा-२ मैं छत्तीस प्रकार के'''''' ॥राधीका॥

छोटी सी दुलहनीयाँ तोरे अंगना में डोलेगी।
तेरे सामने मैंया वो घुंघट ना खोलेगी।
दाऊ से जा कहो-२ बैठेंगें द्वार पें''''' ॥राधिका॥

सुन बाते लाला की, मैया बैठी मुसकायें।
लैके बलैया मैया अपने हृदय से लगायें,
नजर कही लग ना जाये-२ मेरें नन्दलाल को''' ॥राधिका॥

"एकान्त मूर्ख के लिये बन्दी गृह है और ज्ञानी के लिये स्वर्ग"

रहिमन विद्या बुद्धि नहिं, नहीं धरम जस दान ।
जनम वृथा भूपर धरेउ, पसु बिन पूंछ विधान ।।

◆
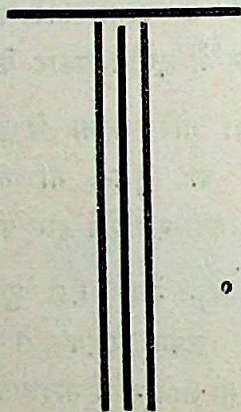
भजन—२१

भक्तो चलके एक बार, करल्यो श्याम से पुकार
बाबा दुखड़े मिटायेंगे,
आयेंगे बाबा, दौड़े दौड़े आयेंगें ॥ टेर ॥

सच्चे मन से करो वन्दना, बाबा की जय बोलो
बाबा के दर पे जा करके, मन के दुखड़े खोलो
खाटू वालो है दातार, पल मे भर देव भण्डार
बिगड़ी, बात बनायेंगे—आयेंगे…

पग-पग पे है रक्षा करता, जीवन नांव संम्भाले
भजन भाव से जो कोई ध्यावे, दर से कभी न टाले
बाबा सबका मददगार, लेवे संकट से उबार
लज्जा, आके बचायेगें…आयेगे……

खाटूवाला खुश हो "राजू" जब करूणा बरसावे
देने वाला नजर न आवे पर झोली भरझावे
देखो श्याम का चमत्कार, हुवा धर-घर में प्रचार
मानो, सब में समायेगें…आयेगे…

॥ विवाह एक दुस्साहसिक कदम है ॥

हरि हर निंदा सुनई जो काना।
होइ पाप गोघात समाना॥

★

"श्री श्याम सागर" के द्वितीय वार्षिकोत्सव पर
हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ

भजन—२२

(तर्ज—मझ जोबन में नाव डुबती)

मोह माया के जाल में फँसकर कुछ भी ना पावोगा,

ले बावा को नाम कि भव से पल में तर जावोगा।

धन दौलत यह महल मालिया, साग कुछ ना जासी,

मुट्ठी बाँहया आयो, रे बंदा, हाथ पसारया जासी-२ ॥ २ ॥

तेरी मेरी करतां सारो, व्यर्था जनम गँवायो,

अंत समय में कुछ तो करले, काल सिराहन आयो-२ ॥ २॥

के सोचे है मिनख जमारो, बार-वार ना पासी,

धरम करम की पूँजी लेले, याही आड़ी आसी-२ ॥ ३ ॥

सत के आगे ब्रह्मा बिष्णु, शिव भी झुकता आया,

ऋषी मुनी जप तप कर हारया, पार कोई ना पाया-२॥ ४ ॥

श्री चरणां में बस है गंगा, श्री चरणां में काशी,

खाटू मथुरा बृन्दावन, सब, श्री चरणां में पासी-२ ॥ ५ ॥

बाबो म्हारो बड़ो है भोळो, पल में खुश हो जावे,

भक्त कर जब याद बाबा ने, दौड़यो-दौड़यो आव-२ ॥ ६ ॥

✡

"चरित्र संगति में और बुद्धि एकान्त में विकसित" होती है"

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं।
अवगुण आठ सदा उर रहहीं ॥

भजन—२३

(तर्जः—सपने सुहाने लड़कपन)

स्थायीः—

नैना है, प्यासे दरश को तेरे,
दरशन देदो तूं श्याय कृपा करके ॥ टेर ॥

अन्तराः—

प्रभु तुम हो अन्तरयामी, मैं मूरख खल और कामी ।
नहीं याद तेरी हैं आती, माया दिल से नहीं जाती,
माया दिल से नहीं जाती,
आया हूँ दर ठोकरे खाके ॥ १ ॥ दरशन..........

ये झूठे जग के नाते, जाने फिर भी अन जाने,
यह भेद समझ ना पाते, ये कैसे रिस्ते नाते;
ये कैसे रिस्ते नाते,

अब तूंही बना दे, दया, करके ॥ २ ॥ दरशन........
तुम स्वामी हो मैं सेवक, तुम महाबली मैं निर्बल
तुम दीपक हो मैं वाती, तुम अविनासी मैं नासी
तुम अविनाशी मैं नासी,
सम्भालो, तूं चाहे खपा होके ॥ ३ ॥ दरशन........

—:o:—

कोटि परम लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार ।।

★

भजन—२४

मेरी पत राखो गिरधारी, मैं दुखिया शरण तिहारी रे ।।मेरी।।
छोड़ तुम्हारा द्वार प्रभु मैं जिसके द्वारे जाऊँ।
तुम बिन मेरी कौन खबर ले किसकी आश लगाऊँ।
अब बोलो कृष्ण मुरारी रे ।। मेरी ।।

देख हमारी बीच भँवर में डूब रही है नैया
चारों तरफ है घोर अंधेरा कोई नहीं है खेवैया,
मुझे शक्ति दो गिरधारी रे ।। मेरी ।।

श्याम दिवानी मीरा पी गई हंसकर विष का प्याला।
श्याम ने अपनी कृपा कौर से बिष अमृत कर डाला।
अब दुःख हरो दुःख हारी रे ।। मेरी ।।

दुःखी होय प्रहलाद पुकारयो लाज रखी गिरधारी।
मैं पापी भी तुझे पुकारूँ सुनते क्यो न मुरारी।
अब सुनलो अर्ज हमारी रे ।। मेरी ।।

चीर हरण की कठिन घड़ी में द्रोपदी नीर बहायी।
चीर बढाकर तुमने श्याम, उसकी लाज बचायी।
मेरी पीर सुनो बनवारी रे ।। मेरी ।।

भीड़ पड़ी तब गज ने पुकारा रक्षा कीन्ही बिहारी।
नरसी पर जब बिपदा आयी भात भरयो बनवारी ।।
अब आज्यो कृष्ण मुरारी रे ।। मेरी ।।

"मानव के लिये क्रूरतम अभिशाप है पराधीन रहना"
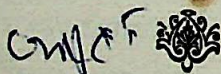
भजन—२५

श्याम आँचल मेरा छोड़ दो इस घड़ी,

पांव जमना में मेरा फिसल जायेगा।
लाज तुमको तो आती नहीं सांवरे,
देख लेगा कोई राज खुल जायेगा॥ श्याम॥

छेड़ने से कभी क्या समझते हो तुम,
दिल किसी का कन्हैया वहल जायेगा।
भीग जायेगी चोली वो सारी मेरी,
पानी गागर का गरचे उछल जायेगा॥ श्याम॥

लौट घर को गईं संग की गोपियाँ,
राह में दिन मुझे श्याम ढल जायेगा।
खानी मैया से झिरकी पड़ेगी मुझे,
तेरा क्या तूँ तो छल के निकल जायेगा॥ श्याम॥

नाम तेरा अवारों में है साँवरे,
तूँ तो किसी वक्त जाने मचल जायेगा।
प्रीत की रीत जाने क्या तूँ सांवरां,
क्या भरोसा तेरा है वदल जायेगा॥ श्याम॥

बाँसुरी इतनी तोखी बजाओ ना,
नहीं तो पहलू से कलेजा निकल जायेगा।
"श्यान बहादुर" कहे अब तो चलते बनो,
वर्ना दिलवर मेरा दिल पिंघल जायेगा॥ श्याम॥

भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है।

भजन—२६

आनन्द लूट रहा है—मोहन तेरी गली में
भक्तों का जमघटा है—मोहन तेरी गली में
देवो का सर झुका है—मोहन तेरी गली में
और क्या बताऊँ क्या है—मोहन तेरी गली में
बैकुण्ठ बस रहा है—मोहन तेरी गली में ॥ १ ॥

द्विजवर सुदामा जैसे, कंगाल हो चुके थे,
अन धन और वस्त्र के, उपवास हो चुके थे,
तेरी शरण लिये से, धनवान हो चुके थे,
होकर प्रसन्न मन में, अपने यूं कह रहे थे,
दौलत का द्वार खुला है—मोहन तेरी गली में ॥ २ ॥

वेश्या का शब्द सुनके, पड़ित ने घर को छोड़ा,
आँखों का दोष पाया, उनसे भी नाता तोड़ा,
दो लेके गर्म सुले आँखों को अपनी फोड़ा,
बन के सुरदास बोले, क्या खुब रिश्ता जोड़ा,
अन्धा भी आ गया है—मोहन तेरी गली में ॥ ३ ॥

गज ग्राह जल के अन्दर, लड़ने लगे लड़ाई,
गज हार गया बाजी, जान पे बन आई,
मोहन को दी दुहाई, आकर हुये सहाई,
बाहर निकल के बोला, धन्य है तेरी प्रभुताई,
क्या वार लग रहा है—मोहन तेरी गली में ॥ ४ ॥

"उत्साही पुरुष बड़े से बड़े कार्यों में दुःखित नही होते"

भजन—२७

दो एकम दो, दो दुनी चार,
प्रेम से बोलो, खाटू वाले की जयकार ॥टेर॥
दो तिये छः, दो चौके आठ,
खाटू वाले बाबा के देखो ठाठ वाठ ॥१॥
दो पाँन्चे दस, दो छन्क बारह,
ये जीवन फिर बन्दे मीलेगा ना दोबारा ॥२॥
दो साते चौदह, दो आठे सोलह,
प्रेम से बोलो जो इक बार भी ना बोल्या ॥३॥
दो नवां अठारह, दो धाई बीस,
'श्याम सागर' के भक्तो लागे ना कोई फीस ॥४॥

भजन—२८

मैं कैसे होली खेलूँ रे, इण सांवरिया के संग (टेर)
कोरे-कोरे माट भराये, जामे घोले रंग
भर पिंचकारी तन पे मारी, चोली हो गई तंग ॥ मैं कैसे......
तबला बाजै सरंगी बाजै, और बाजै मृदंग
सांवरिया की बंशी बाजी, राधाजी के संग ॥ मैं कैसे......
इक तो आई राधा प्यारी, गोपियां लिन्हे संग
मीरा ग्वाल बाल सब सोहे, नंदलाल के संघ ॥ मैं कैसे......
लहंगा भिजोया साड़ी भिजोई, हुवा किनारी रंग
सूर श्याम की काली कमली, चढ़े न दूजो रंग ॥ मैं कैसे......

जैसा अनजल खाइए, तैसा ही मनहोय।
जैसा पानी पीजिए, तैसी बानी होय॥

*

SPACE Donated by

A
WELL
WISHER

भजन—२९

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

दोहा—जै-जै बाबा श्यामजी, विनय करूँ कर जोड़ ।
भूल क्षमा कर दिज्यो, देख भक्त की ओर ॥

गरीबों के दाता हो गरचे मुरारी,
मेरी पार नैया लगानी पड़ेगी ॥
जो तूं ने करोड़ों की बिगड़ी संवारी,
मेरी पार नैया लगानी पड़ेगी ॥

गुजारा न होगा तूं गरचे खफा है
अगर तूं मेरा है तो बेशक नफा है
मैं सदियों से तेरे हूँ दर का भिखारी ॥ मेरी पार ॥

तूं भण्डार है यूं सुना है दया का
शहनशाह है तूं ही सारे जहां का
क्या तौहिन होगी दया की तुम्हारी ॥ मेरी पार ॥

जमाने के मालिक मेरी आरजु है
तुम्हीं से मेरी सांवले जस्तजु है
खता कौन काशी की सुधि क्यों बिसारी ॥ मेरी पार ॥

"सलाह तो अनेकों प्राप्त करते हैं, परन्तु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है"

नारी आवे प्रीत कर, सतगुरु परसे आन।
दरिया हित उपदेश दे, माँ बहन धी जान॥

★

भजन—३०

म्हारा कानूडा गिरधारी, खिचड़ खाले रे बनवारी,
करमां विनती कर-कर हारी, बेटी जाटा री ।।टेर।।
बापू दूजै गांव सिधायो, थारो मन्दिरियो संभलायो
सारो पूजा ढंग सिखायो, बेटी जाटारी ।।
बेटी तड़के उठ जाइये, म्हारा गिरधर न नहवाइये
पूजा करके भोग लगाइये, बेटी जाटारी ।।
मीठे पानी से नहलायो, ऊँचे आसन पर बैठायो
लम्बो केशर तिलक लगायो, बेटी जाटारी ।।
जडकर मन्दिरिये में ताली, करमां गीत गांवती चाली
ल्याई खिचडलो भर थाली, बेटी जाटारी ।।
संवारे छाछ राबड़ी ल्याऊँ, मीठी गुडरी खीर बनाऊँ
उठकर भोरां भोर जिमाऊं, बेटी जाटारी ।।
म्हारी भूल बनादूयो सारो, क्यों थे रूठ्या श्याम बिहारी
म्हाने गाल्यां पड़सी खारी, बेटी जाटारी ।।
बापू बाहर गांव से आवे, म्हान मुक्का से धमकावे
करमा आसुंडा ढलकावे, बेटी जाटारी ।।
आगे गरदन काट चढ़ाऊँ, या मैं जहर खाय मर जाऊँ
तो भी थांनै आज जिमाऊँ, बेटी जाटारी ।।
पडदो धाव लिया रो दिन्यो, मोहन खिचडलो खालिन्यो
भोला भक्तां दर्शन किन्यो, बेटी जाटारी ।।
बोल्यो ठाकुर मिट्ठो वाणी, म्हान प्यादो ठंडो पाणी
करमां थारी प्रीत पिछाणी, बेटी जाटारी ।।
पाछो गांव चोधरी आयो, करमा सारो हाल सुनायो
सुनकर घणो अचम्भो आयो, बेटी जाटारी ।।
थारो 'श्याम सागर' हरषावे, भोला भक्तां रा गुण गावे
म्हारी नैया पार लगावे, बेटी जाटारी ।।

परहित बस जिन्ह के मन माहीं।
जिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

●

भजन-३१

(तर्ज—जिन्दगी प्यार का)

श्यांम आये हैं दर पे तेरे, हमको दरसन दिखाना पड़ेगा,
भक्तों ने है पुकारा तुम्हें आज तो तुमको आना पड़ेगा ॥

तेरा सच्चा ये दरबार है, कहता सारा ये संसार है,
ये ही सुनकर के आये है हम, दास हमको बनाना पड़ेगा ॥

तेरे दर के भिखारी हैं हम, चरणों के पुजारी हैं हम,
तुम हो स्वामी हम सेवक तेरे, ये रिस्ता निभाना पड़ेगा ॥

नैया अटकी ये मजधार हैं, तेरे हाथों ही पतवार हैं,
नैया के खेवइँया तुम्हीं, पार उसको लगाना पड़ेगा ॥

विनती सुनले मेरे खाटूवाला, मन के मन्दिर में करदो उजाला,
कैसे दर्शन हम पाये तेरा, हमें इतना बताना पड़ेगा ॥

'ताराचन्द' ये ही अरजी करे, तेरे चरणों में ध्यान धरे,
भोले भाले हम भक्त तेरे, मान हमारा बढ़ाना पड़ेगा ॥
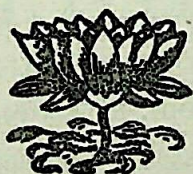
"साधारण शत्रु की भी उपेक्षा ठीक नहीं होती"

कबिरा संगत साधु की, ज्यों गन्धी के बास।
जो कुछ कन्धों दे नहीं, तौ भी बास सुबास॥

ज्यों गूंगे के सैन को गूंगा ही पहिचान।
त्यों ज्ञानी के सुक्ख को, ज्ञानी होय सो जान ॥

Amar Aanand Printers
JETPUR
SAURASHTRA

सिर जावे तो ज़ाण दो, झूठ न बोलो कोय ।
साहिल तो सुखराम कह, सांच वण में होय ॥

भजन—३२

॥ श्री श्याम वन्दना ॥

चरणों का पुजारी हूँ, चोखट को भिखारी हूँ।
जिन्दगी दांव पे रख दो, प्रभु ऐसा जुआरी हूँ॥
ये मेरी हकीकत है, चहुँ ओर मुसीबत है।
हारा हुआ प्राणी हूँ, सुन ले यदि फुरसत है।
उमरां तेरी यादों में, प्रभु क्यों न गुजारी हूँ॥
रुख नेक मिलाओ तो, दिल दिल से मिलाओ तो।
मुद्दत से जो प्यासा हूँ, दो घूंट पिलाओ तो।
तसवीरे अदा तेरी, इस दिल में उतारी हूँ॥
हर बात समझते हो, अनजान भी बनते हो।
नाराजी है क्या ऐसी, दिलदार न मनते हो।
दिवाना हूँ जिस दिन से छवि तेरी निहारी हूँ॥
तुम श्याम बहादुर के दो नयनों की ज्योति हो।
करुणा हो तेरी प्यारे, बदनाम जो होती हो।
कहने भी नहीं पाता, चाकर तो सरकारी हूँ॥

"जो मित्रता समानता में नहीं होती, वह घृणा में समाप्त होती है।"

कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वोहि खाये बौराय है, यही पाये बौराय ॥

भजन—३३

निर्मोही नन्दलाल, घणो तरसावै मतना।
पुराणी यारी है रै सांवरा, भुलावै मतना ॥
निर्मोही नन्दलाल ॥

मुलक मुलक कै दूर दूर सै, नितकी जीव जलावै।
एक बरतो नीड़ै सी आकै, क्यूं ना बीन वजावै।
मेरे कालजै में आग, लगावै मतना…पुरानी ॥
निर्मोही नन्दलाल ॥

नैना बरसै, हिवडो तरसै, तूँ क्यों सुध विसराई।
वैरण नींद बड़ेरी रातां, कईयां होय समाई।
कन्हैया छीजै काया जीव नै, दुखावै मतना…पुरानी ॥
निर्मोही नन्दलाल ॥

दुनियाँ हाँसै नितकी म्हांसै, चालै आडी आडी।
तूं ही छिटका देवैगो तो, चालैगी नहीं गाडी।
मोटा सेठिया तूं, रोल मचावै मतना…पुरानी ॥
निर्मोही नन्दलाल ॥

दुःख हरता, तू पालन करता, साँचो श्याम बिहारी।
'काशीराम' चरण को चेलो, अर्ज करै गिरधारी।
थारो बालक हूँ, या प्रीत घटावै मतना…पुरानी ॥
निर्मोही नन्दलाल ॥

कीर्ति मित्र का काम करता है।

साईं अपने भ्रात को, कबहुँ न दीजै त्रास।
पलक दूर नहिं कीजिए, सदा राखिए पास ॥

★

भजन—३४

लहर-लहर लहराय रे झण्डा बजरंग बली का
बजरंग बली का झण्डा हनुमत बली का ॥ टेर ॥

इस झण्डे में क्या—२ गुण है।
सीता की खोज लगाय रे॥ झण्डा बजरंग॥
इस झण्डे में और क्या गुण है।
अक्षय को मार गिराय रे॥ झण्डा बजरंग॥
इस झण्डे में और क्या गुण है।
सोने की लंका जलाय रे॥ झण्डा बजरंग॥
इस झण्डा में और क्या गुण है।
सागर पे शिला तिराय रे॥ झण्डा बजरंग॥
इस झण्डे में और क्या गुण है।
सजीवन बूटी लाये रे॥ झण्डा बजरंग॥
इस झण्डे में और क्या गुण है।
लक्ष्मण के प्राण बचाय रे॥ झण्डा बजरंग॥
इस झण्डे में और क्या गुण है।
सीता को राम से मिलाये रे॥ झण्डा बजरंग॥
इस झण्डे में और क्या गुण है।
'श्याम सागर' की लाज बचाय रे॥ झण्डा बजरंग॥

जो औरों को काला करता है वह खुद को सफेद नहीं करता।

जानि सरद रितु खंजन आए।
पाई समय जिमि सुकृत सुहाए ॥

भजन—३५

(तर्ज :—ढोला ढोल मजीरा वाजे...)

थारे झाँझ नगारा बाजे रे।
सालासर के मन्दिर में हनुमान बिराजे रे॥ टेर॥

भारत राजस्थान में जी, सालासर एक धाम।
सूरज स्यामी वण्यो देवरो, महिमा अपरम्पार।
थारे लाल ध्वजा फहरावे रे, सालासर.........

नारेलां री गिनती कोनी बाबा, सुवरण छत्र अपार।
दूर देश सैं दर्शन करने, आवे नर और नारी।
थारे जात जडूला लागे रे, सालासार...............

चैत सुदी पूनम को मेलो, भीड़ लगै अति भारी।
नर-नारो तेरा दर्शन करने, आवे बारी बारी।
बाबो अटक्यो काज संवारे रे, सालासर......

रामदूत अंजनी के सुत का, धरो हमेशा ध्यान।
"चैनसिंह" चरणों का चाकर, लाज राखो हनुमान।
बाबौ बेगो पार लगावे रे, सालासर...............

जो आत्मा संयमी नहीं है वह स्वतन्त्र नहीं है।

धन चावे तो धर्म कर, रूप चावे तो शील।
मुक्ति चावे तो भजन कर, तीनों बात सुशील॥
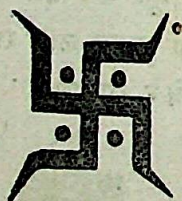
भजन—३६

कैसे कलेवा करलु मैं पहले, सुनलो जरा मैंना रानी।
भांग नहीं छानी रे भांग नहीं छानी.....................॥

तुजो सपने दिखाये दुर के, मुझे क्यों देखे हैं घुर कें,
दिल मेरा नहीं बहला सके, तेरे लड्डु मोती चुर के,
बिन भंग कैसे करलु कलेवा, कहने लगे शिव वरदानी ॥१॥

ये जो हलुवा पड़ा बादम का, बोलो ये मेरे किस काम का,
खिर मेवा मिठाई ना चाहुँ, मैं तो भुखा भंग के नाम का,
तुझको मुबारक ये तेरी चीजें, मुझको मेरी भंगीया रानी।२।

तीन दिन से रहे सब टाल है, किया किसने मेरा ख्याल है,
हुवा कोटा खत्म मेरे पास का, बिन भंगिया मन बेहाल है,
कैसे ससुर हो राजा हिमाचल, बर की कदर कुछ ना जानी।३।

सुनो सासु जी मेरी बात को, खुश करदो भोले नाथ को,
भंग जो ना छनाई आपने, जाऊँ वापश ले बारात को
पियोर दूध में भंगीया छनेगी, जीस में जरा सा न हो पानी॥४॥

भंग का जब किया फलहार है, हुऐ मन मंगन त्रिपुरार है,
ना विकल हो कलेवा अब करूँ, भरू सब का अब भंडार है,
अंद के जब आँऊ तुमसे मैं मीलने, करना नहीं मन की मानी॥५॥

—०—

"उत्साह से बढ़कर दूसरा बल नहीं है"

जाकर चित अहि गति सम भाई।
अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई॥

भजन—३७

दोहा—तेरे दरबार मे भोले अजव जलवा गिरी देखी।
न देते कुछ तुझे देखा मगर झोली भरी देखी ॥

भक्त भोले का चला शिव जी को मनाने के लिए,
हाथ में दो फूल लोटा उनपे चढ़ाने के लिए।
झाड़ जंगल पार करके पहूँचा है, मंदिर पास,
घुस गया मन्दिर के अन्दर जल चढ़ाने के लिए…
जल चढ़ा कर मन में सोचा घंटे को अब दूं बजा,
हाथ ऊपर कर दिया घंटा वजाने के लिए……
देख कर सोने का घंटा सहसा लालच आ गया,
क्या बुरा जो इसको लेलूं खर्चा चलाने के लिए…
ऊपर उठने के लिए जब कोई साधन ना मिला,
चढ़ गया भोले के ऊपर घंटा चुराने के लिए……
देख कर हालत ये उसकी आ गये भोले वहाँ,
और बोले माँग ले तू मुक्ति पाने के लिए……
भोले को जब देखा उसने मन में कंपित हो गया,
है खड़ा चुप-चाप अब तो भाग जाने के लिए…
मन में सोचा उसने ऐसी कैसी मैंने भक्ति की,
आ गये भोले यहाँ वरदान देने के लिए……
भोले बोले और सब हमपे चढ़ाते बैलपत्र,
तू यहाँ दीवाना आया खुद को चढ़ाने के लिए…
देख कर भोले के भोलेपन पे शुद्धि आ गयी,
माँगा है वरदान उसने भक्ति पाने के लिए……

जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठि।
मैं बौरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठि॥

भजन—३८

दोहा—कृष्णचन्द बसुदेव जब पृथ्वी पर अवतारी है।
उनका दर्शन को शंकर ने मन में धारी है॥
पहुँचे तब गोकुल में आके संग में प्यारी नारी है॥
बोले मात यसोदा योगी दर्शन का ही भिखारी है॥

दिखाऊँ कोनी लाडलो नजर लग जाय।
नजर लग जायरे जुलम होई जाय॥
दिखाऊँ कोनी...

विषधर तेरे गले में लपटे अंग विभूति रमाये।
तेरे रूप को देख के योगो लाला मेरो डर जाये॥
दिखाऊँ कोनी...

हीरा मोती लाल जवाहर जो चाहे ले जाये।
पर योगी नन्द लाल का दर्शन कभी न होने पाये॥
दिखाऊँ कोनी...

हुए उदास भोले शिव शंकर अपना कदम बढ़ाये।
जाते देख हरी को प्रभु ने रो-रो के चिल्लाये॥
दिखाऊँ कोनी...

नन्दलाल का रोना सुनकर बोली मात यसोदा।
नजर लगादी मेरे लाल को हाय-२ अब क्या होगा॥
दिखाऊँ कोनी...

बोले शिव है मात यसोदा लाला को ले आवो।
नजर उतारूँ तेरे लाल की लाके मुझे दिखावो॥
दिखाऊँ कोनी...

इतना सुनकर मात योसोदा लाला को ले आयी।
दर्शन किये हरी के प्रभु की 'राजू' खुशी मनायी॥
दिखाऊँ कोनी...

मुनि आश्चर्य करै सब कोई।
सत्संगति महिमा नहीं गोई॥

भजन—३६

लुटा दिया भण्डार झुँझनू वाली ने !!

.कर दिया माला माल झुँझनू वाली ने ॥ टेर ॥

जैसी जो भावना लाया, वैसा ही वो फल पाया।
नहीं खाली उसे लौटाया, वो मन ही मन हरषाया॥
अरे कर दिया उसको निहाल, झुँझनू वाली ने॥ १ ॥

जो लगन लगाया सच्ची, है उनकी नाव न अटकी।
बेड़े को पार लगाया, नहीं देर करी वो पल की॥
अरे मिटा दिया जंजाल, झुँझनू वाली ने॥ २ ॥

चरणों की किया जो सेवा, वो पाया मिश्री मेवा।
जिसने है मांगा बेटा, वो चाँद सा टूकड़ा पाया॥
कर दिया सबको निहाल, झुँझनू बाली ने॥ ३ ॥

जिसने श्रृंगार सजाया, वो माँ का दर्शन पाया।
वो मन ही मन हरषाया, नैनों में रूप समाया॥
अरे दिया है, जन्म सुधार, झुँझनू वाली ने॥ ४ ॥

"कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है"

समदरसी मोहि कह सब कोऊ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ॥

भजन—४०

(तर्ज—मैं तुलसी तेरे आंगन की)

स्थायी—लागी लगन श्याम, तेरे दरशन की ऽऽऽऽ
लागी लगन श्याम ॥ टेर ॥

अंतरा—बीच सभा द्रोपदी पुकारी, आ जावो है कृष्ण मुरारी
देर करी ना पलभर की ॥१॥ लागी-लगन॥

जल में गज को ग्राह ने घेरा, हार, डाल दिया तुझपे डेरा
विपदा हरी तुने भक्तन की ॥२॥ लागी लगन ॥

नरसी की तूने हुण्डी सिकारी नानी बाई की बिगड़ी बनाई
काटी विपदा अपनन की ॥३॥ लागी लगन ॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दरश करायो हो नटवर नागर
प्यास बुझाई तूने अखियन की ॥४॥ लागी लगन

भगतो संग दामोदर थारी, महिमा गावे मुरली धारी,
देर करो ना अब आवन की ॥५॥ लागी लगन ॥

"जो भाग्य में ही बिश्वास करते हैं उनके कार्य की सिद्धि नहीं होती"

हंसा बगुला एक सा, मान सरोवर माहिं।
बगा ढँढौरे माछरी, हंसा मोती खाहिं॥

भजन—४१

इनसाफ का दर है, तेरा, यही शौच कर आया हूँ।
हर बार तेरे दर से, खाली ही जाता हूँ ॥टेर॥

आवाज लगाता हूँ, क्यों जबाब नहीं मीलता।
दानी हो सबसे बड़े, मुझको तो नहीं मीलता ॥
सब हंसते है मुझ पे, मैं आंसु बहाता हूँ ॥१॥

ज्जवात दीलो के प्रभु, धीरे से सुनाता हूँ।
देखे न कहीं कोई, हालत ही छुपाता हूँ ॥
सब हंसते है मुझ पे, मैं आंसु बहाता हूँ ॥२॥

दीनो को सताने का, अन्दाज पुराना है।
देरी से आने का, बस एक बहाना हैं।
खाली जाने में प्रभु, मन में शरमाता हूँ ॥३॥

हैरान हुं प्रभु तुम से, दुखीयो को लोटाया हैं।
फिर किसके लीये तुमने, दरबार लगाया हैं।
'बनवारी' महीमा तेरी, कुछ समझ न पाता हैं ॥४॥

आचरण के बिना ज्ञान केवल भार होता हैं।

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहिं सुजान॥

भजन—४२

(तर्ज—म्हारो बेड़ो पार लगादिज्यो)

म्हारे नैना में बस जावो जी मदन गोपाल।
मदन गोपाल प्यारा नन्द जी रा लाल ॥ टेर ॥

थारी सुरत लागें प्यारी, म्हें हारी सुध बुध सारी,
थारीं याद बहुत सताव जी मदन गोपाल ॥१॥

गंगा जल से नहलांवा, चौकी पर थाने बिठावा,
थानैं नित नया भजन सुनावा जी मदन गोपाल ॥२॥

जो खाओ सो ही बनाऊँ, कंचन रो थाल सजाऊँ,
जो भावें सो ले लिज्यो जी मदन गोपाल ॥३॥

नित थारी आरती गावां, थानै नित नया भजन सुनांवा,
थे भुंल नहीं मत जाज्यो जी मदन गोपाल ॥४॥

मुरली की तान सुनाओं, संग गोपीयाँ को भी लाओ
म्हारे घर मैं रास राचाओ जी मदन गोपाल ॥५॥

'मूर्ख मनुष्य अपने दोषों को कभी नहीं देखता'

संग तें जती कुमंत्र ते राजा।
गान ते ग्यान पान ते लाजा ॥
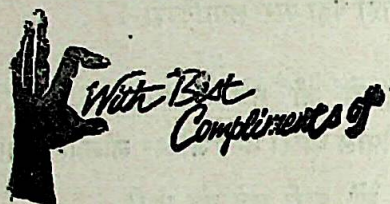
भजन—४३

(तर्ज :—डेडो हो जा रे सिपाहिड़ा)

दोहा :—भक्तों के श्री श्याम जी, आप हो पालन हार।
दर्शन होवे आपका, तो हो जावे उद्धार॥

आज्या आज्या रे सावरिया, दर्श दिखा जा रे सावरिया।
रखना लाज रे। २.........

सब भक्तों के श्याम प्रभु जी, तुम्ही पालन हार।
भक्तों की रक्षा करने को, रहो हमेशा त्यार॥
धीर बंधा ज्या रे सावंरिया, कष्ट मिटा ज्या रे सावरिया।
रखना लाज रे। २.........

जिसने श्याम प्रभु को पुकारा, आवं दौड़ा दौड़ा।
दर्श दिखाने वो भक्तों को, चढ़कर लीले घोड़ा॥
दर्श करस्या रे सावरिया, भोग लगास्या रे सावरिया।
रखना लाज रे। २......

श्याम प्रभु से विनती करीयो, मन से ध्यान लगाकर।
तर जाओगो भव सागर से, भजन श्याम का गाकर॥
रात जगावां रे सांवरिया, ज्योत जलावां रे सावरिया।
रखना लाज रे। २.........

'ताराचन्द' थारे चरणों में, नित की शीश झुकावे।
"श्याम सागर" मिळ थाने बाबा; नित नया भजन सुनावे॥
सबकी सुनज्यो रे सावरीया, भक्ति दीज्यो रे सावरिया।
रखना लाज रे। २.........

रहिमन चुप होय बैठिए देख दिनन का फेर।
जब नीके दिन आइ हैं बनत न लागे देर॥

भजन—४४

(तर्ज :—घमाल)

॥ अस्थाई ॥

मेलो बाबै साथीड़ो आपां खाटू चालां—मेलो०

अन्तरा :—

रंग विरंगी तरह-तरह की ध्वजा हाथ में ले ल्यो रे ॥
गाता और बजाता चालां श्याम रिझाल्यां रे-मेलो०
चंग बजाता होली गाता मिलकर हेलो देल्यो-रे ॥
श्याम धणी के चरणां में, मिल शीशी नवाल्यां रे-मेलो०
फागण मांहीं मेलो भारी, सब घरकां ने ले ल्यो-रे
श्याम कुंड में न्हाकर जीवन सफल बणाल्यां रे-मेलो०
श्याम बाग आलूसिंहजी से रामा श्यामा करल्यो-रे
घूम घूम खाटू नगरी में, मौज उड़ाल्यां रे-मेलो०
बाबै की असवारी निकले, सब कोई दर्शन पाल्यो-रे
एकादश की रात, श्याम की ज्योत जगाल्यां रे-मेलो०
बारस के दिन खीर चूरमो, भोग श्याम को करल्यो-रे
बाबाजी की करां बन्दगी, आशीष पाल्यां रे-मेलो०
श्याम शरण में होकर "सांवर" खाटू होली खेलो-रे
साल सवाई मन्दिर आगै घूमर घालां रे-मेलो०

"सन्त स्वयं तीर्थों को पवित्र करते है"

रहिमन दानि दरिद्रतर, तऊ जाचिवे जोग।
ज्यों सरितन सूखा परे, कुंवा खनावत लोग ॥

भजन—४५

(तर्ज :—धमाल)

दोहा :—

हाथ जोड़ विनती करूँ मेरो छोटो सो है काम।
या अर्जी मंजूर करो तो जाणूं सांचो श्याम॥

॥ अस्थाई ॥

नैना नीचाकर श्याम से मिलावेली कैया, नैणा नीचाकार ॥टेर॥

अन्तरा :—

तीखै तीखै नैणां मांहीं—झीणों झीणों सुरमो।
हाँ ये राधे—नैणां से नैणां मिलावेली कैयां ॥१॥ नैणां नीचा…
गोरी-गोरी बैयां में हस्यां - हस्यां चुड़लो।
हां ये राधे—बैयां से बैयां मिलावेली कैया ॥२॥ नैणा नीचा…
गोरी-गोरी हाथां में, लाली-लाली मेंहन्दो।
हां ये राधे—झालो दे-दे बुलावेली कैयां ॥३॥ नैणा नीचा…
गोरे-गोरे पागल्यां में झिम-झिम बिछिया।
हां ये राधे—श्याम संग नाचेली कैयां ॥४॥ नैणा नीचा…
"चन्द्र सखी" भज बाल कृष्ण छबि।
श्याम के चरणा में चित्त ल्यावैली कैयां ॥५॥ नैणा नीचा…

"शरीर धर्म का मुख्य साधन है"

जिन्ह के असि मति सहज न जाई।
ते सठ कत हठि करत मिताई॥

भजन — ४६

(तर्ज :— चलत मुसाफिर)

फागुन को मेलो आय गयोरी चालो खाटू नगरिया
खाटू नगरिया चालो बाबा की दुवरिया"'।।टेर।।
फागुन को मेलो बड़ो अलबेलो, बाबो बुलाव देकरके हेलो,
मोको जोर को आय गयोरी ।।चालो खाटू नगरिया।।
खाटू में मेले की धूम मची है, खाटू जास्यां मन में जची है,
मनड़ो म्हारो लुभाय गयोरी ।।चालों खाटू नगरिया।।
असबारी बाबा निकलेगी भारी झुमेंगे नाचेंगे लाखो नरनारी
क्या में देर लगाय रहयोरी ।। चालो खाटू नगरिया।।
ग्यारस की वेठ रात जगावा वारसक दिन धोक लगावा,
म्हारे बाबा को बुलावो आय गयोरी ।।चालो खाटू नगरिया।।
खाटू में घणु आनन्द आसी, अनुपम दर्शन बावे का पासी
मोर पपीहा बोल रहयोरी ।।चालो खाटू नगरिया।।
जो बाबो के मेले में जासी विन मांग्यां वो सब कुछ पासी,
म्हार बाबा को खजानो खुलगयोरी ।।चालो खाटू नगरिया।।
"श्यम-सागर" थांने याद करे बाबा थांसूँ अरदास करे,
चरणा में शीश नवाय रहयो री ।।चालो खाटू नगरिया।।

卐

अन्धे के सिर पर यदि माला भी डाली जाय तो
वह उसे सर्प की शंका से गिरा देता है

भजन—४७

रंग भरी झोली अबीर भरा थाल,
होली आई राधे चुनरीया सम्भाल ।। टेक ।।
फूले बन टेसु की फूल रहें सरसों
राधे तेरा वादा हैं आज, कल, परसों
आज, कल, परसो में बित गया साल ।।१।।
मारो जरा पिचकारी राधें को कसके
मधुवन में छिन लिया दिल मेरा हँसके
गोरे-गोरे गालों में मल दो गुलाल ।।२।।
मधुबन मे आज हुआ कान्हा दिवाना
'चंचल' लुटाता हैं दिल का खजाना
दिल का खाजान राधे डाके न डाल ।।३।।

भजन—४८

कहणो मान ले साँनरिया, इतणो मतना रुसे रे, कहणो मानले
तेरे रे रुस्याँ स सारी दुनिया बोली मारे रे
हाँसो मता करावे, इतणो मतना रुसे रे ।। १ ।।
तेरे रे रुस्याँ स मेरी आँसूड़ां गम खावे ना
आजा मता रुलावे, इतणो मतना रुसे रे ।।२।।
तेरे रे रुस्याँ स मेरी नींदड़ली खो जावे रे
क्यूं ना खोज लगावे, इतणो मतना रुसे र ।।३।।
तेरे रे रुस्याँ स मेरी बात बिगड़तो डोले रे
क्यूं ना बात बणावे, इतनो मतना रुसे रे ।।४।।
तेरे रे रुस्याँ स तेरो नोत घबड़ावे रे
क्यूंना धीर बंधावे' इतणो मतना रुसे रे ।।५।।

स्वर्ग बुलावा भेजिया दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग में सो वैकुण्ठ न होय॥

भजन—४९

तुम झोली भरलो भक्तो रंग और गुलाल से
होली खेलागा आपा गिरधर गोपाल से ॥ टेर ॥
कोरे-कोरे कलश मँगाकर उसमें रंग घुलवाना-२
लाल गुलाबी नीला पीला केसर रंग मिलवाना-२
बच-२ के रहना उनकी टेढ़ी मेढ़ी चाल से ॥१॥
लायेंगे वो अपने संग में ग्वाल बाल की टोली-२
मैं भी रंग अबीर मंलुगा और माथे पे रोली-२
गायेंगे फाग मिलके झींका खडताल से ॥२॥
श्याम पिया की बजे बंसुरिया ग्वालो के मंजीरे-२
चंग बजावै ललिता नाचै राधा धीरे-धीरे-२
गायेंगे भजन सुहाने हम भी सुर ताल से ॥३॥

भजन—५०

॥ पितरदेव की स्तुति ॥

जय जय पितर जी महाराज, मैं शरण पड्यो हूँ थारी।
आप ही रक्षक, आप ही दाता, आप ही खेवनहारे ॥
मैं मूरख हूँ कुछ नहिं जानू आप ही हो रखवारे ॥१॥ जय०
आप खड़े हैं हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी।
हम सब जन हैं शरण आपकी है ये गुवारी ॥२॥ जय०
देश और परदेश सब जगह, आप ही करो सहाई।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई॥३॥ जय०
मैं हूँ शरण आपकी, अपने सहित परिवार।
रक्षा करो आप ही सबकी, रटूं मैं बारम्बार ॥४॥ जय०

बड़े बड़ाई ना करे, बड़े न बोलै बोल।
रहिमन हीरा कब कहैं, लाख टका मेरा मोल ॥

भजन—५१

(तर्ज—भरवा दे मदन गोपाल)

चढ़वा दे हो बाबा श्याम, निशान म्हारो चढवा दे!
चढ़वा दे बाबा, चढ़वा दे, चढ़वा दे हो बाबा श्याम ॥ टेर ॥

चल कर आयो रे, बाबा बड़ी दूर से, म्हारो कर दे इतनो काम
निशान म्हारो..............

भीड़ खड़ी है रे, बाबा तेरे द्वार पर, बड़ो करां है इन्तजार
निशान म्हारो.........

भक्तां नाच रे, नाचे ढप की तान पे, आयो सुन क थारो नाम
निशान म्हारो.........

बैठया है बालाजी रे, बाबा थार द्वार पे, बान पहल्यां करू प्रणाम
निशान म्हारो.........

झण्डो फहरायो रे, शिखर बन्द पे, म्हारो पूरण करदो काम
निशान म्हारो.........

शीश नवावां रे, थार चरणां म, 'श्याम सागर आयो' खाटूधाम
निशान म्हारो......

मित्रता उनसे कभी न करो, जो तुमसे बेहतर नहीं

बसि कुसंग चाहत कुशल, यह रहीम अफ़सोस।
महिमा घटी समुन्द्र की रावन बसा परोस॥

भजन—५२

बानर बाँकोरे लंका नगरीमें मचगयो हाको रे ॥ टेर ॥

मात सिया यूं बोली वेटा, फल खाई तूं पाको रे ।
इतने मार्यों कूद्या हनुमत, मार फदाको रे ॥ १ ॥

रुँख उखाड़ पटक धरणीपर, भोग लगाय फलाँकोरे ।
रखबाला जब पकड़ण लाग्या; दियो भड़ाको रे ॥ २ ॥

राक्षसिया अरड़ावे सारा काल आंगयो म्हाँको रे ।
मुँहपर मार पड़े मुक्काँरी, फाड़े बाको रे ॥ ३ ॥

हात टांग तोड़े सिर फोड़े, घट फोड़े ज्यूँ पाको रे ।
उथल पुथल सब करयो बगीचो बिगड़यो खाखो रे ॥ ३ ॥

उजड़ी पड़ी अशोक बाटिका' मारंग सड़काँकोरे ।
लुक छिपकर कई घरमें घुसग्या, पड़ गयो फाको रे ॥ ५ ॥

जाय पुकार करी रावणस्यूँ ' दिन खोटो असुरांको रे ।
कपी आय एक घुस्यो बाग में जबर लड़ाको रे ॥ ६ ॥

भेज्यो अक्षकुमार भिड़णनें, हणुमत सामों भांक्यो रे
एक लात की पड़ी असुरपर गयो नाको रे ॥ ७ ॥

घन घन रे रघुवरका प्यारा, अतुलित बल है थाँको रे
तूँ ही जगमें मुकुटमणी है, राम-भगतांको रे ॥ ८ ॥

जो भी दुष्प्रांत्य वस्तु है वह कठिन तप से ही प्राप्त की जा सकती है ।

जिन्ह के असि मति सहज न जाई।
ते सठ कत हठि करत मिताई॥

भजन —४६

(तर्ज :– चलत मुसाफिर)

फागुन को मेलो आय गयोरी चालो खाटू नगरिया

खाटू नगरिया चालो बाबा की दुवरिया"'॥टेर॥

फागुन को मेलो बड़ो अलबेलो, बाबो बुलाव देकरके हेलो,

मोको जोर को आय गयोरी ॥चालो खाटू नगरिया॥

खाटू में मेले की धूम मची है, खाटू जास्यां मन में जची है,

मनड़ो म्हारो लुभाय गयोरी ॥चालों खाटू नगरिया॥

असबारी बाबा निकलेगी भारी झुमेंगे नाचेंगे लाखो नरनारी

क्या में देर लगाय रहयोरी ॥ चालो खाटू नगरिया॥

ग्यारस की वेठ रात जगावा वारसक दिन धोक लगावा,

म्हारे बाबा को बुलावो आय गयोरी ॥चालो खाटू नगरिया॥

खाटू में घणु आनन्द आसी, अनुपम दर्शन बावे का पासी

मोर पपीहा बोल रहयोरी ॥चालो खाटू नगरिया॥

जो बाबो के मेले में जासी बिन मांग्यां वो सब कुछ पासी,

म्हार बाबा को खजानो खुलगयोरी ॥चालो खाटू नगरिया॥

"श्यम-सागर" थांने याद करे बाबा थांसूँ अरदास करे,

चरणा में शीश नवाय रहयो री ॥चालो खाटू नगरिया॥

卐

अन्धे के सिर पर यदि माला भी डाली जाय तो वह उसे सर्प की शंका से गिरा देता है

भजन—४७

रंग भरी झोली अबीर भरा थाल,
होली आई राधे चुनरीया सम्भाल ।। टेक ।।
फूले बन टेसु की फूल रहें झरसों
राधे तेरा वादा हैं आज, कल, परसों
आज, कल, परसो में बित गया साल ।।१।।
मारो जरा पिचकारी राधें को कसके
मधुवन में छिन लिया दिल मेरा हँसके
गोरे-गोरे गालों में मल दो गुलाल ।।२।।
मधुबन मे आज हुआ कान्हा दिबाना
'चंचल' लुटाता हैं दिल का खजाना
दिल का खाजान राधे डाके न डाल ।।३।।

भजन—४८

कहणो मान ले साँनरिया, इतणो मतना रुसे रे, कहणो मानले
तेरे रे रुस्याँ स सारी दुनिया बोली मारे रे
हाँसो मता करावे, इतणो मतना रुसे रे ।। १ ।।
तेरे रे रुस्याँ स मेरी आँसुड़ां गम खावे ना
आजा मता रुलावे, इतणो मतना रुसे रे ।।२।।
तेरे रे रुस्याँ स मेरी नींदड़ली खो जावे रे
क्यूं ना खोज लगावे, इतणो मतना रुसे र ।।३।।
तेरे रे रुस्याँ स मेरी बात बिगड़तो डोले रे
कयूं ना बात बणावे, इतनो मतना रुसे रे ।।४।।
तेरे रे रुस्याँ स तेरो नोत घबड़ावे रे
वयूंना धीर बंधावे' इतणो मतना रुसे रे ।।५।।

स्वर्ग बुलावा भेजिया दिया कबीरा रोय।
जो सुख साधु संग में सो वैकुण्ठ न होय॥

भजन—४६

तुम झोली भरलो भक्तो रंग और गुलाल से
होली खेलागा आपा गिरधर गोपाल से ॥ टेर ॥
कोरे-कोरे कलश मँगाकर उसमें रंग घुलवाना-२
लाल गुलाबी नीला पीला केसर रंग मिलवाना-२
बच-२ के रहना उनकी टेढ़ी मेढ़ी चाल से ॥१॥
लायेंगे वो अपने संग में ग्वाल वाल की टोली-२
मैं भी रंग अबीर मंलुगा और माथे पे रोली-२
गायेंगे फाग मिलके झींका खडताल से ॥२॥
श्याम पिया की बजे वंसुरिया ग्वालो के मंजीरे-२
चंग बजावै ललिता नाचै राधा धीरे-धीरे-२
गायेंगे भजन सुहाने हम भी सुर ताल से ॥३॥

भजन—५०

॥ पितरदेव की स्तुति ॥

जय जय पित्तर जी महाराज, मैं शरण पड्यो हूँ थारी ।
आप ही रक्षक, आप ही दाता, आप ही खेवनहारे ॥
मैं मूरख हूँ कुछ नहिं जानू आप ही हो रखवारे ॥१॥जय०
आप खड़े हैं हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी ।
हम सब जन हैं शरण आपकी है ये गुवारी ॥२॥ जय०
देश और परदेश सब जगह, आप ही करो सहाई ।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई॥३॥जय०
मैं हूँ शरण आपकी, अपने सहित परिवार ।
रक्षा करो आप ही सबकी, रटूं मैं बारम्बार ॥४॥जय०

वड़े बड़ाई ना करे, बड़े न बोलै बोल।
रहिमन हीरा कब कहैं, लाख टका मेरा मोल ॥

भजन—५१

(तर्ज—भरवा दे मदन गोपाल)

चढ़वा दे हो बाबा श्याम, निशान म्हारो चढवा दे !
चढ़वा दे बाबा, चढ़वा दे, चढ़वा दे हो बाबा श्याम ॥ टेर ॥

चल कर आयो रे, बाबा वड़ी दूर से, म्हारो कर दे इतनो काम
निशान म्हारो..............

भीड़ खड़ी है रे, बाबा तेरे द्वार पर, बड़ो करां है इन्तजार
निशान म्हारो........

भक्तां नाच रे, नाचे ढप की तान पे, आयो सुन क थारो नाम
निशान म्हारो........

बैठया है बालाजी रे, बाबा थार द्वार पे, बान पहल्यां करू प्रणाम
निशान म्हारो........

झण्डो फहरायो रे, शिखर बन्द पे, म्हारो पूरण करदो काम
निशान म्हारो........

शीश नवावां रे, थार चरणां म, 'श्याम सागर आयो' खाटूधाम
निशान म्हारो......

मित्रता उनसे कभी न करो, जो तुमसे बेहतर नहीं

बसि कुसंग चाहत कुशल, यह रहीम अफसोस।
महिमा घटी समुन्द्र की रावन बसा परोस॥

भजन—५२

बानर बाँकोरे लंका नगरीमें मचगयो हाको रे ॥ टेर ॥
मात सिया यूं बोली बेटा, फल खाई तूं पाको रे।
इतने मार्यों कूद्या हनुमत, मार फदाको रे ॥ १ ॥
रूँख उखाड़ पटक धरणीपर, भोग लगाय फलाँकोरे।
रखबाला जब पकड़ण लाग्या; दियो झड़ाको रे ॥ २ ॥
राक्षसिया अरड़ावे सारा काल आंगयो म्हाँको रे।
मुँहपर मार पड़े मुक्काँरी, फाड़े बाको रे ॥ ३ ॥
हात टांग तोड़े सिर फोड़े, घट फोड़े ज्यूँ पाको रे।
उथल पुथल सब करयो बगीचो बिगड़्यो खाखो रे ॥ ३ ॥
उजड़ी पड़ी अशोक बाटिका' मारंग सड़काँकोरे।
लुक छिपकर कई घरमें घुसग्या, पड़ गयो फाको रे ॥ ५ ॥
जाय पुकार करी रावणस्यूँ 'दिन खोटो असुरांको रे।
कपी आय एक घुस्यो बाग में जबर लड़ाको रे ॥ ६ ॥
भेज्यो अक्षकुमार भिड़णनें, हणुमत सामों झांक्यो रे
एक लात की पड़ी असुरपर गयो नाको रे ॥ ७ ॥
धन्न धन रे रघुवरका प्यारा, अतुलित बल है थाँको रे
तूँ ही जगमें मुकुटमणी है, राम-भगतांको रे ॥ ८ ॥

जो भी दुष्प्राप्य वस्तु है वह कठिन तप से ही प्राप्त की जा सकती है।

With Best
Compliments of

भजन—५३

ओ जी ओ मिजाजी म्हारा सांवरिया,
थारी बाबा ओल्यूं आवै वेगा आओ जो सांवरा।
थानै तो मनवां घणां चाव सूं,
थे हंस हंस कंठ लगाओ, ना तरसाओ जी सांवरा॥
ई दुनिया सूं न्यारो थारो देवरो,
थे रतन सिंहासन बैठया हुक्म सुनाओ जी सांवरा॥
नैणां माईं छलके थारो नेहड़ो,
थारा टाबरियांरा अठक्या काम संवारो जी सांवरा॥
भूल्यां थारा बालकियां न ना सरै,
थारी जादुगारी मुरली आज बजाओ जी सांवरा॥
भूल्योड़ा भटक्यां न थारो आसरो,
म्हारी नैया नाथ पुरानी पार लगाओ जी सांवरा॥
जागरणों ग्यारस की च्यानण रात को,
कोई बारस न थे खीर चूरमो खाओ जी सांवरा॥
जीम्या पीछे थारा हाथ धुवायस्यां,
ल्यो दो बीड़ा थे मगही पान चबाओ जी सांवरा॥
"शर्मा काशीराम" थारो बालकियो,
थारा कह्या कहर हुकम उठवां क्यूं फरमाओजी सांवरा॥

—०—

किसी काम को बिना विचारे न करे।

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना।
ग्यान मोक्ष प्रद वेद बखाना॥

भजन—५४

उत्सव भजन

(तर्ज आज म्हार आँगणिये)

दोहा :—भेज्या हां म्हे प्रेम निमंत्रण प्रभुवर तुम्हें बुलाने को
श्याम सागर का सेठ सांवरां उत्सवमांही आने को ॥

श्याम सागर में उत्सव मनावां श्याम को आज जी
मनवां श्याम को आज जो, बुलावां श्याम न आज जी
उत्सव क दिन खाटूवाले, लीले चढकर आयो जी
मोर छड़ी बावाक हाथां, दर्शन करल्यो आज जी
मोर मुकुट की शोभा निराली, हीरो चमके लाल जी
तन केशरिया बागों सोव, गल वैजन्ती माल जी
केशर को थार तिलक लगावा, पुष्पहार पहरावां जी
नाच-नाच कर भजन सुनावां, मन में हर्ष अपार जी
चम्पा चमेली गैंदां से, सिनगार सजायो थारो जी
भांतो भांती का इतर चढ़ाकर, प्रेम से लाड लडावा जी
छप्पन भोग छतीस मैवा भर के सजाया थाल जी
जिमण की था सूँ अर्ज गुजारे, सगला ही नर नार जी
"श्याम सागर" या टेर लगाव भक्तां क घर आव जी
"बसन्त लाल" श्रीश्याम प्रभुका, हर्ष-हर्ष गुणगाव जो
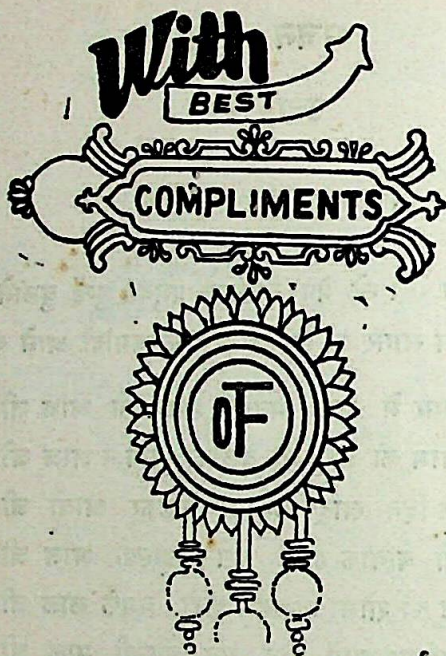
卐

भजन — ५५

अर्जी थे म्हारी सुणज्यो, खाटू वाला धणियाँ।
आवो पधारो म्हार आगणियाँ म्हारा खाटूवाला धनिया ॥टेर॥

आश विश्वास लिया थारी बाट जोवा हाँ,
खाटू वालो आसी-आसी करके दिनड़ा खोवा हाँ,
रात्याँ बतावां करके जागणियाँ ॥ म्हारा खाटूवाला ॥

दिन बित्या राता वीती, बाबा थान टेरता,
बरसाँ का बरस बित्या माला थारी फेरता,
हाथारी दुखण लागी आँगलियां ॥ म्हारा खाटूवाला ॥

सारंगी शरीर वणग्यो मन इकनारो है,
दोन्या ही सजारो वाबा यो ही इस नारो है;
आवो म्हार मन री माला रा मणियां ॥ म्हारा खाटू वाला ॥

खाटू का सिरदार थान धणी धणी खम्भा जी,
दो करोड़ थे म्हान दिज्यो बाकी राखो जमा जी,
थे हो देवणीयां म्हे हां लेवणियां ॥ म्हारा खाटूवाला ॥

भगतां री पुकार सुण खाटू वालो आयो है,
दास थारा दर्शन कर अति सुख पायो है,
चरणां का चाकर "अणतुराम" वणिजाँ ॥ म्हारा खाटूवाला ॥
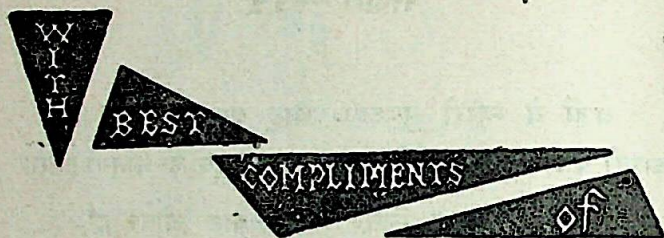
भजन—५६

(तर्ज—लला लला···(मुक्ती)

आयो फागण मेलो बाबो मार हेलो,
खाटू धाम चालो, भक्ता न संग लेलो ॥ टेर ॥

फागणियों रंगीलो महीनों, भोत लागे प्यारो,
मंदरीया म होली खेला, साग खाटू वारो,
केशर रंग पिचकारी, लाल गुलाल उडेलो ॥ खाटू धाम॥

जम घट मांचै अंगणिये में नाचै कूदे जोर से,
टोलिया की टोली आव जैकारा बोले जौर से,
ढोलक-ढप ओर झाँझ बाजे, साथ म नगाडो ॥ खाटू धाम ॥

लाग्यो है दरबार ऐसो बाबा की सरकारी म,
फरियादी है रकम-२ का थाँकी तावेदारी म,
होवे है सुणवदई थे भी अर्जी गेरो ॥ खाटू धाम ॥

शरणागत कासंकट बाबा से ना देख्या जावे,
दुःखिया का सन्ताप बाबो पल म मिटावे,
ऐसो है दयालू श्याम खाटू वारो ॥ खाटू धाम ॥

के सोच है बावला करले खाटू को त्यारी,
श्याम धणी का दर्शन करस्यां दुविधा मीटज्या सारी,
भोत ही बेगो रिझे मोहन मुरली वारो ॥ खाटू धाम ॥

ओड़ बड़े संसार माई थारो एक अधार है,
बाबा म्हारो ध्यान राखियो टावर की पुकार है,
"श्याम सागर फरमावे, सबने गले लगावे ॥ खाटू धाम ॥

शुभकामनाओं के साथ :—

चन्देरीवाला

गोपीलाल एण्ड सन्स

निर्माता : चन्देरी साड़ी
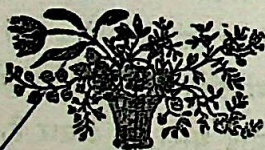
१८१।ए, चित्तरंजन एवेन्यू,

कलकत्ता-७

भजन—५७

अस्थाई

देखो री एक बाला जोगी द्वारे मेरे आया री ॥ टेर ॥
ओढ बाघम्बर पहर पिताम्बर घर-घर अलख जगाया री ॥

अन्तरा

अंग बिभुती गले मृग छाला, शेषनाग लिपटाया री ।
मस्तक ऊपर तिलक चन्द्रमा, योगी जटा बढ़ाया री ॥ देखो ॥

भिक्षा ले नन्दरानी आई, मोतियन थाल भराया री ।
ले भिक्षा घर जावो सदाशिव, मेरा लाल डराया री ॥ देखो ॥

ना चाहिये तेरा माणक मोती, ना चाहे धन माया री ।
तेरे लाल को मुख दिखलादे, योगी ध्यान तज आया री ॥देखो॥

मेरे बालक को क्या दिखलाऊँ, मैं क्या नोखा जाया री ।
बालक लें नंदरानी आई, कर आंचल की छाया री ॥ देखो ॥

दर्शन कर परिक्रमा दीन्ही सिहीं नाद बजाया री ।
शिवशंकर कैलाश पधारया, सुरदास गुण गाया री ॥ देखो ॥

Shyam Sundar Sharma

50/3/1, G. T. ROAD,

(Mahadevi Vidyalaya)

HOWRAH

JAIN INDUSTRIES

59, COTTON STREET,

CALCUTTA-700007

भजन—५८

(तर्ज—दिल के अरमा)

जब तेरी डोली निकाली जाएगी
विन महूरत के उठाली जायेगी
उन हकीमों से कहौ यूं बोलकर
करते थे दावा कितावें खोलकर
यह दवा हरगिज न खाली जायेगी
विन महूरत के उठा ली जायेगी......

जर सिकन्दर का यहीं पे रह गया
मरते दम लुकमान भी यों कह गया
यह घड़ी हरगिज न टाली जायेगी
विन महूरत के उठा ली जायेगी ॥

क्यूं गुलों पर हो रही बुल-बुल निसार
है खड़ा माली वो पीछे होसियार
मार कर गोली गिराली जायेगी
विन महूरत के उठा ली जायेगी ॥

होगा जव परलोक में तेरा हिसाव
कैसे मुकरोगे वतादो ए जनाव
जव वही तेरी निकाली जायेगी
विन महूरत के उठा ली जायेगी ॥

ऐ मुसाफिर क्यूं वसरता है यहाँ
यह किराये का मिला तुझको मकां
कोठरी खाली करा ली जायेगी
विन महूरत के उठा ली जायेगी ॥

भगवान श्याम बिहारी
आपका आयोजन सफल करें।

रामायण बिक्र फील्ड

का० प्र० सिंह

वैघबाटी

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ :—

सज्जन कुमार पोद्दार

एवं

पवन कुमार पोद्दार

कलकत्ता

भजन—५६

लेके डोली पिया द्वार पर आ गये,
मेरे अरमा पडे के पडे रह गये,
चार बतिया भी मैं उनसे करना सकी,
दोनो नैना लड़े के लड़े रह गये ॥ टेर ॥

उनके आते ही पथरा गई पुतलियां
रूक गई दिल की धड़कन रुकी नाड़िया
कहती कुछ पर ज़ुंवा मेरी हिल न सकी
मुँह मे ताले पड़े के पड़े रह गये ॥ १ ॥

मेरी फूलों से डोली सजायी गई
एक अनोखी चदरिया उढाई गई
व्याकुल दिल थामते और तड़पते रहे
माँ की ममता पड़ी की पड़ी रह गई ॥२॥

हाथ खाली थे संग में थी नेकी बदी
खुद को महसूस अब हो रही बे खुदी
जो कमाया था धन झुठ से पाप से
वो खजाने गड़ें के गड़े रह गये ॥ ३ ॥

मेरी चदंन से सैया सजायी गई
आग उसमें लगाकर सुलाई गई
लाख की जिन्दगी खाक में मिल गई
सारे कुनवे खड़े के खड़े रह गये ॥ ४ ॥

जो परम मित्र थे जिनको छोड़ा नहीं
कभी बदकिस्मती में मुख मोड़ा नहीं
छोड कर वे सभी के सभी चल दिये
हम अकेले पड़े के पड़े रह गये ॥ ५ ॥

भजन—६०

(तर्ज म्हारो देव बड़ो दातार)

म्हाने खाटु में बुलाले एक बार-बाबा खाटू का
घनी दुर से ओ बाबा म्हें आवा
म्हारी नैया की सम्भालो पतवार-बाबा खाटू का
महिमा थारी ओ बाबा बड़ी भारी
थे तो भगता का रखवारा—बाबा खटू का
आश लगाकर ओ बाबा म्हे आवे
म्हा पर महर करों करतार—बाबा खटू का
रात जगावां ओ बाबा म्हे थारी
थानें भजन सुनावा वे-सुमार-बाबा खाटू का
सवा रूपयों ओ बाबा भेट करां
देवा जात जडुंला थारे द्वार—बाबा खाटू का
कोई क पीहर ओ बाबा सासरियो
म्हार श्याम ही बड़ो दातार—बाबा खाटू का
शरण में आया ओ बाबा म्हे थारी
म्हान चरणा में लगालो एक बार—बाबा खाटू का
थारो 'वसन्त' कर अरदास बाबा थार सूं
करियो 'श्याम सागर' का वेड़ापार—बाबा खाटू का

भक्त वत्सल भगवान की जय हो।

The Second Anniversary

of

SHREE SHYAM SAGAR

a

COMPLIMENTS FROM

Srigopal Dhelia

CALCUTTA

भजन — ६१

म्हारै सांवरियै री भौत मन में आवै म्हारा साथीडा।
म्हान खाटू में ले चलो जी......

—अन्तरा—

गंगा भी नहाया, म्हे तो जमुना भी न्हाया,
म्हारा श्याम कुंड री गाढी मन में आवै
म्हारा साथीड़ा ॥ म्हानै ॥
रात नै सोवां तो म्हान नींद नहीं आवे,
म्हारो मन्दिरयै में जीव उड़-उड़ ज्यावै
म्हारा साथीड़ा ॥ म्हानै ॥
लाडू भी खाया, म्हे तो पेड़ा भी खाया,
म्हारै चूरमा री गाढी मन में आवै
म्हारा साथोड़ा ॥ म्हानै ॥
ढोलक भी बाजै मजीरा भी बाजै
म्हारै नाचबा री गाढी मन में आवै
म्हारा साथीड़ा ॥ म्हानै ॥
"सोहनलाल" का भजन सुणांला,
म्हारै भजना री गाढी मन में आवै
म्हारा साथीड़ा ॥ म्हानै ॥

मनुष्य की तृप्ति धन से नहीं हो सकती।

॥ समिति के वार्षिकोत्सव पर सप्रेम भेंट ॥

व्रत एवं त्योहार १९८५-८६

मार्च (फाल्गुन-चैत्र)

रंगभरी एकादशी व्रत,	३ रविवार
खाटू श्यामजी का मेला,	४ सोमवार
होलिकादहन,	६ बुधवार
पूर्णिमा,	७ गुरुवार
श्री गणेश व्रत,	१० रविवार
शीतलाष्टमी,	१४ गुरुवार
पापमोचनी एकादशी व्रत,	१७ रविवार
अमावस्या,	२१ गुरुवार
चैत्र नवरात्र आरम्भ,	२२ शुक्रवार
श्री रामनवमी,	३० शनिवार

अप्रेल (चैत्र वैशाख)

कामदा एकादशी व्रत,	१ सोमवार
महावीर जयन्ती,	४ गुरुवार
पूर्णिमा व्रत (हनुमान जयन्ती)	५ शुक्रवार
श्री गणेश व्रत,	८ सोमवार
वरुथिनी एकादशी व्रत,	१५ सोमवार
अमावस्या,	२० शनिवार
अक्षय तृतिया	२३ मङ्गलवार

मई (वैशाख)

मोहनी एकादशी व्रत,	१ बुधवार
बुद्ध पूर्णिमा (चन्द्रग्रहण)	४ शनिवार
श्री गणेश व्रत,	७ मङ्गलवार
अचला एकादशी व्रत,	१५ बुधवार
वट-सावित्री व्रत (अमावस्या)	१६ रविवार
श्री गंगादशहरा,	२६ बुधवार
निर्जला एकादशी व्रत,	३० गुरुवार

जून (ज्येष्ठ-आषाढ़)

पूर्णिमा,	३ सोमवार
श्री गणेश व्रत,	६ गुरुवार
एकादशी व्रत,	१४ शुक्रवार
अमावस्या,	१८ मङ्गलवार
रथयात्रा,	२० गुरुवार
हरिशयनी एकादशी व्रत,	२८ शुक्रवार

जुलाई (अषाढ़-श्रावण)

गुरु पूर्णिमा	२ मङ्गलवार
श्री गणेश व्रत.	५ शुक्रवार
कमदा एकादशी व्रत,	१३ शणिवार
अमावस्या,	१७ बुधवार
पवित्रा एकादशी व्रत,	२८ रविवार
पूर्णिमा,	३१ बुधवार

अगस्त (श्रावण-भाद्र)

श्री गणेश व्रत,	४ रविवार
कमनार एकादशी व्रत,	१२ सोमवार
स्वतन्त्रता दिवस,	१५ गुरुवार
अमावस्या,	१६ शुक्रबार
पुत्रदा एकादशी व्रत,	२६ सोमवार
पूर्णिमा,	२६ गुरुवार
रक्षा बन्धन,	३० शुक्रवार

सितम्बर (भाद्र-आश्विन)

श्री गणेश व्रत,	३ मङ्गलवार
श्री कृष्ण जन्माष्टमी,	७ शनिवार
जया एकादशी,	११ बुधवार
अमावस्या (सती दिवस)	१४ शनिवार
हरतालिका (तीज व्रत) विश्वर्मा पूजा,	१७ मंगलवार
गणेश चतुर्थी,	१८ बुधवार
ऋषि पंचमी,	१६ गुरुवार
बाबा रामदेव जयन्ती,	२३ सोमवार
पद्मा एकादशी,	२४ मङ्गलवार
अनन्तचतुर्दशी,	२७ शुक्रवार
पूर्निमा (पितृपक्ष आरम्भ)	२८ शनिवार

अक्टूबर (आश्विन-कार्तिक)

श्री गणेश व्रत,	२ बुधवार
गांधी जयन्ती,	२ बुधवार
इन्दिरा एकादशी व्रत,	१० गुरुवार
अमावस्या (सोमवती)	१४ सोमवार
शारदीय नवरात्रारम्भ	१५ मंगलवार
महाष्टमी,	२१ सोमवार
विजयादशमी,	२३ बुधवार
पाप कुशा एकादशी व्रत,	२४ गुरुवार
शरद् पूर्णिमा,	२८ सोमवार

नवम्बर (कार्तिक-मार्गशीर्ष)

श्री गणेश व्रत, (करवा चौथ)	१ शुक्रवार
राधा अष्टमी,	५ मंगलवार
रम्भा एकादशी व्रत,	८ शुक्रवार
धन तेरस,	१० रविवार
दीपावली,	११ सोमवार
अन्न कुट,	१३ बुधवार
भ्रातृ द्वितीया,	१४ गुरुवार
सूर्य षष्टी व्रत,	१८ सोमवार
गोपाष्टमी,	२० बुधवार
पुसोकनी एकादशी व्रत,	२३ शनिवार
कार्तिक पूर्णिमा (जैन रथ यात्रा, गुरु नानक जयन्ती)	२७ बुधवार

॥ आरती श्री श्याम बिहारीजी की ॥

जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे।
खाटूधाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥ १ ॥ ॐ
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर ढुरे।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ॥ २ ॥ ॐ
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ॥ ३ ॥ ॐ
मोदक, खीर, चूरमा, कञ्चन थाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ॥ ४ ॥ ॐ
झाँझ नगारा और घड़ियावल, शंख मृदंग घुरे।
भक्त आरती गावे, जय जयकार करे ॥ ५ ॥ ॐ
जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम श्याम उचारे ॥६॥ ॐ
श्री श्यामबिहारीजी की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत "आलूसिंह" स्वामी मनवाँछित फल पावे ॥७॥ ॐ

जय श्री श्याम हरे ओ बाबा, जय श्री श्याम हरे।
सब भक्तों के आपने, पूरण काम करे ॥

आरती श्री बालाजी की

जय बजरंग बाला ओ बाबा, जय बजरंग बाला
हित चित से जो ध्यावे, आवे मतबाला।

श्री रामचन्द्र जी के पायक भक्तन रखवाला।
जो सुमरे सुख पाये, कट जावे जमजाला॥

लाल लंगोटा हाथ में घोटा, गल पुष्पन माला।
बाजू बन्द भुजा में, अंजनि के लाला।

संजीवन लाये लखन जियाये, आये तत्काला।
लंका आग लगाई, कर दिये वेहाला॥

रावण का मद तुमने जाकर, खंडित कर डाला।
देख रूप घबराया, बीस भुजा बाला॥

वो बल याद करो जब तुम, दुश्मन घेरा ढाला।
भक्तजनों की लाज बचाओ, बाबा सालासरवाला॥

॥ आरती श्री लक्ष्मीजी की ॥

जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन सेवत हर विष्णु धाता ॥ टेर ॥
ब्रह्माणी रुद्राणी कमला, तुही हो जग माता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ जय०
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता ।
जो कोई तुम को ध्यावत ऋद्धि सिद्धि धन पाता ॥ जज०
तू ही है पाताल बसन्ती, तू ही है शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव-प्रकाशिनि जगनिधि से त्राता ॥ जय०
जिस घर थारो बासो जाहि में गुण आता ।
कर न सकै सोई कर ले मन नहीं धड़काता ॥ जय०
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता ।
खान पान को वैभव तुम बिन कुण दाता ॥ जय०
शुभ गुण · सुन्दरयुक्ता, क्षीरनिधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तोकूँ कोई भी नहीं पाता ॥ जय०
या आरती लक्ष्मीजी की जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द अति उमंगे पाप उतर जाता ॥ जय०
स्थिर चर जगत बचावै, कर्म प्रेर ल्याता ।
"श्याम सागर" मैया जी की शुभ दृष्टि चाता ॥ जय०

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, क्या करै तरवारि॥

BAJRANG TRADERS

(दिसम्बर मार्गशीर्ष पौष)

श्री गणेश व्रत,	१ रविवार
श्री राणीसती जी शोभा यात्रा,	६ शुक्रवार
उत्पन्ना एकादशी व्रत,	८ रविवार
अमावस्या,	११ बुधवार
मोक्षदा एकादशी व्रत,	२२ रविवार
पूर्णिमा,	२५ बुधवार

जनवरी (पौष-माघ) १९८६

नववर्षारम्भ,	१ बुधवार
पुत्रदा एकादशी व्रत,	६ सोमवार
पूर्णिमा,	१० शुक्रवार
श्री गणेश व्रत,	१४ मंगलवार
मकर संक्रान्ति,	१४ मंगलवार
षटतिला एकादसी व्रत,	२१ मंगलवार
भारतीय गणतन्त्र दिवस,	२६ रविवार

फरवरी (माघ फाल्गुन)

रथ सप्तमी,	१२ शनिवार
जया एकादशी व्रत,	५ बुधवार
माघी पूर्णिमा,	८ शनिवार
श्री गणेश व्रत,	१२ बुधवार
बिजया एकादशी,	२० वृहस्पतिवार
महा शिवरात्रि व्रत,	२२ शनिवार
अमावस्या, १९ मंगलवार—	२४ सोमवार
खाटू श्यामजी का मेला	६ मार्च वृहस्पतिवार

अब तू धर्म का बीज बोया, क्यों विष बीज बोता है।
ऐसा मौका फिर नहीं आवे, अरे जीव क्यों खोता है॥

॥ पुष्पांजलि ॥

हाथ जोड़ विनती करुं, सुणज्यो चित लगाय ॥
दास आ गयो शरण में रखियो इसकी लाज ॥
धन्य ढुंढ़रो देश है, खाटू नगर सुजान ॥
अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण ॥
श्याम-श्याम मैं रटूं, श्याम है जीवन प्राण ॥
श्याम-भक्त जग में बड़े, उनको करू प्रणाम ॥
खाटू नगर के बीच में, बण्यो आपको धाम ॥
फागुन शुक्ला मेला भरे, जय-जय बाबा श्याम ॥
फागुन शुक्ला द्वादशी, उत्सव भारी होय ॥
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय ॥
उमापति, लक्ष्मीपति, सीतापति श्रीराम ॥
लज्जा सबकी राखियो, खाटू के श्री श्याम ॥
पान, सुपारी इलायची, अत्तर सुगन्ध भरपूर ॥
सब भक्तन की बिनतीं, दर्शन देवो हजूर ॥
'श्याम-भक्त' तो प्रेम से, धरे श्याम का ध्यान ॥
'श्याम सागर' पावे सदा, श्याम कृपा से मान ॥
जन्म-जन्म की अपराधनी, अवगुण भरा शरीर ॥
ऊँच नीच मत देखियो, दर्शन दो श्री श्याम ॥
अवगुण मेरा मत गीनो, सभी आपके हाथ ॥
मैं तो कछु जानु नहीं, आप जानो श्री श्याम ॥

—o—

पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

कार्यालय :

४५, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट,

कलकत्ता-७०००७

प्रकाश स्टोर

४२, शिवतल्ला स्ट्रीट,
(ढाका पट्टी)
कलकत्ता-७

नथमल अग्रवाल

७३, बड़तल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता-७

नन्दकिशोरजी धानुका

२१/बी, कैनिंग स्ट्रीट,
कलकत्ता-१

बसंतलाल साह

३, वाट किंस लेन,
हवड़ा-१
(भवानी सिंहजी की बाड़ी)